www.thearyasamaj.org

.॥ ओ३म् ॥

आर्य वीर गीतांजली

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

सार्वदेशिक आर्यवीर दल

अरुणोदय वैदिक साहित्य प्रकॉशन

सम्पादक

ब्र. अरुणकुमार आर्य

[आर्य वीर]

सहयोग राशि १०/- रु०

www.thearyasamaj.org

सदीप
3-आर्य

सम्पादकीय

ईश्वर की महती कृपा से आर्य वीर गीतान्जली प्रकाशित होने जा रही । अरूणोदय वैदिक साहित्य प्रकाशन का प्रथम पुष्प आर्य वीर दिनचर्या का ि वीरों ने बहुत अच्छा स्वागत किया इस द्वितीय पुष्प के प्रकाशन में श्री **सतीश डलवाल (खंडेलवाल फोटो स्टेट)** का आर्थिक सहयोग तथा श्री **राजेश बोस** मुख पृष्ठ बनाने में तथा पूज्य आचार्य **जगद्ददेवजी नैष्ठिक** का भी योग उल्लेखनीय है इन सब का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

इस प्रकाशन से समय-समय पर महापुरूषों की जीवनियों एवं आर्य वीर ि संबन्धित पुस्तकों को प्रकाशित करने का विचार है अतः दानी सज्जन नुभावों से विनम्र निवेदन है कि वे इस राष्ट्रीय महायज्ञ में सात्विक दान णोदया वैदिक साहित्य प्रकाशन के नाम भेजकर हमें सेवा का अवसर प्रदान ंगे इसी आशा के साथ आपका विनित.....

ब्र0 अरूणकुमार आर्य
(आर्य वीर)

स्तक प्राप्ति स्थान :

- सतीश खण्डेलवाल, खण्डेलवाल फोटोस्टेट, 15 थाना रोड़, न्यू मार्केट, भोपाल पिन- 462 003,फोन नं0 551254.
- ब्रह्मचारी अरूणकुमार आर्य, आर्ष गुरूकुल नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म0प्र0) आर्यावर्त देश - 461 001.
- आर्य समाज मन्दिर, तांत्याटोपे नगर, भोपाल ।
- बाबूलाल जी आनन्द, आर्यकुंज, विदिशा - 464 001.

www.thearyasamaj.org

भूमिका

ब्रह्मचारी श्री अरूणकुमारजी आर्य व्यायाम शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीरदल की तुलिका से निसृत एवं संकलित अरूणोदय वैदिक साहित्य प्रकाशन का यह द्वितीय पुष्प है चरित्र निर्माण, महर्षि दयानन्द, आर्य वीरदल, आर्यसमाज, प्रभुभक्ति एवं देशभक्ति के 100 गीतों के संकलन का यह प्रयास वस्तुतः अप्रतिम है । मुख्य रूप से युवकों को स्पंदित एवं स्फुरित करने की दृष्टि से यह अत्यन्त उपादेय है ।

इसके अतिरिक्त शोभा यात्रा एवं प्रभातफेरी में बोले जाने वाले जयघोष, उद्घोष आदि के समावेश ने भी इस लघु पुस्तिका को और भी अधिक उपयुक्तता प्रदान की है । इस सर्वांगसुन्दर गीतमाला के प्रकाशन में श्री सतीश जी खंडेलवाल (भोपाल (एवं ब्रह्मचारी श्री अरूणकुमार आर्य का पुनीत आर्थिक योगदान उल्लेखनीय है ।

वैदिक सुरभि को सुरभित करने वाली इस पुष्पमाला के अगले पुष्प होंगे त्यागी तपस्वी स्वराष्ट्र एवं मानवता के लिए तील -तील जल उत्सर्ग करने वाले बलिदानी महापुरूषों की प्रेरणादायी जीवनियाँ , जिनसे चरित्र निर्माण की धारा अव्याहत रूप से प्रवाहित होगी । इस स्तुत्य प्रयास हेतु ब्रह्मचारी श्री अरूणजी को साधुवाद देते हुये दानदाताओं से भी अनुरोध करना चाहुँगा कि वे पुष्कल आर्थिक सहयोग प्रदान कर इस प्रयास को सफल बनाये ।

गीतों की मधुरिम ध्वनि कायह वैदिक निनाद दिग्-दिगन्त तक गूंजे यही मंगल कामना और परम प्रभु से प्रभूत प्रार्थना है ।

बाबूलाल आर्य ' आनन्द '
प्रांतीय संचालक,
आर्य वीर दल, (म0 प्र0 (

www.thearyasamaj.org

आर्य जगत में आधुनिक द्रोणाचार्य

के नाम से जाने जाने वाले

मेरे पूज्य गुरुदेव डॉ. देवव्रत

आचार्य प्रधान संचालक

सार्वदेशिक आर्य

वीर दल

के चरणों में

सादर

समर्पित !

ब्र. अरुणकुमार आर्य
आर्यवीर

www.thearyasamaj.org

अनुक्रमणिका

गीत संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	आब्रह्मन् ब्राह्मणों	1
2.	ब्राह्मन् स्वराष्ट्र में हों	1
3.	ध्वजेयं मुदा वर्धते	2
4.	अमृत बेले जाग	2
5.	निद्रा से जाग प्यारे	3
6.	उठ जाग मुसाफिर	4
7.	ओम् हम सब ब्रह्मचारी	4
8.	जगदीश ज्ञानदाता	5
9.	जगती को आज जरूरत है	5
10.	भारत की मिट्टी चन्दन है	6
11.	देश हमारा धरती अपनी	7
12.	चांद सितारों जैसी	7
13.	यह गगन हमारा है	8
14.	हमको है अभिमान देश का	8
15.	राष्ट्र को ऊँचा उठाना	9
16.	हर आरजू से प्यारी	10
17.	रूढ़िया को तोड़ दो	10
18.	ऐ वतन ऐ वतन हमको	11
19.	निज राष्ट्र के शरीर के	12
20.	जननी जन्म भूमि	13
21.	बलिदानों से हमको	14
22.	भारत म्हारो देश	15
23.	ओ नीला घोडारा असवार	16
24.	धरती की शान	16
25.	मेरा रंग दे बंसती चोला	17

www.thearyasamaj.org

त संख्या		पृष्ठ संख्या
6.	चित्रकार चित्र ऐसे	18
7.	एक डाल के हम हैं पंछी	19
8.	जाग उठो ऐ नवजवानों	20
9.	तुमको कितनी बार जगाया	21
0.	एक साथ उच्चार करें	22
1.	ऋषि ऋण को चुकाना है	23
2.	जिस दिन वेद के मंत्रों से	24
3.	सदाचार का शासन	25
4.	हम इतिहास लिखेंगे	26
5.	नीलगगन के नीचे	27
6.	भारत के कोने कोने से	28
7.	फूलों से तुम हसना सीखों	28
8.	छोटे-छोटे पांव है अपने	29
9.	अनुशासन के जीवन धन	30
0.	संगठन हम करें	30
1.	निर्माणों के पावन युग में	31
2.	इक ज्योति जगायेंगे	32
3.	कैसा माहोल ये बन रहा है	33
4.	ऐ वतन के नौजवाँ	34
5.	शपथ लेना तो सरल है	34
6.	तुम समय की रेत पर	35
7.	अन्यायी से लड़ना सीखों	36
8.	नारी जो बने	36
9.	इस तरह बनेगा स्वर्ग	37
0.	सादरं समीयताम्	39

www.thearyasamaj.org

गीत संख्या		पृष्ठ संख्या
51.	कर्मयोगे मनोयस्य	39
52.	आनन्द सुधा सार	40
53.	भारत का कर गया बेड़ा पार	41
54.	धन्य है तुझको ऐ ऋषी	41
55.	अगर स्वामी दयानन्द ना हमारा	42
56.	जहां घोषणा राम के नाम की	42
57.	उठो दयानन्द के सिपाहियों	44
58.	तुम इतने महान् बनाये	45
59.	प्रभु जी इतनी सी दया कर दो	46
60.	दया कर दान भक्ति का	47
61.	ओम् है जीवन हमारा	47
62.	ओम नाम के हीरे मोती	48
63.	जगत् साकार बनाया है	48
64.	मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता	49
65.	मेरा उद्देश्य हो प्रभु	50
66.	तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा	50
67.	पास रहता हूँ तेरे सदा मै अरे	51
68.	यह जीवन तुम्हारा तुम्हीं को	52
69.	मेरे दाता के दरबार में	52
70.	अवगत कराता तुम्हें साथियों	53
71.	क्या पूछे ओ जनाबेआली	54
72.	गंगा की कसम	55
73.	भले बुरे कर्मों की जग में	56
74.	आर्य वीरों उठो	57
75.	जागो तो एक बार	58
76.	हो रही धरा विकल	59
77.	उठो जवानों करो प्रतिज्ञा	59

www.thearyasamaj.org

गीत संख्या		पृष्ठ संख्या
78.	आई फौज दयानन्द वाली	60
79.	सिर जावे तो जावे	60
80.	वीर दल है वीर दल	61
81.	जिन्दगी है शान की	61
82.	कदम कदम बढ़ाये जा	62
83.	कदम से कदम को मिलाता	62
84.	है पुकारता स्वदेश जाग	63
85.	हम रूकना झुकना क्या जाने	63
86.	करना है निर्माण हमें तो	64
87.	ये ओम् का झण्डा आता है	65
88.	ये ओम् का झण्डा हमारी	65
89.	जग में वेद प्रचार हमें तो	66
90.	वैदिक रीति सिखलाई आर्य समाज ने	67
91.	जग को जगाने वाला आर्य समाज	68
92.	संगठन हम करें आपदों से	68
93.	काम ज्यादा बातें कम	69
94.	बढ़ता चल बढ़ता चल	69
95.	शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में	70
	जयघोष	71

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है ।

2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

3. वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना -सुनानाा सब आर्यो का परम-धर्म है ।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक-1

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ।
ब्रह्मवर्चसी जायतां जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्य : ।
शूर इषव्योऽतिव्याधी
महारथो जायतां जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्ति. पुरन्धिर्योषा
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो ।

युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां जायताम्
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न औषधयः पच्चन्तां पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पतां कल्पतां
कल्पतां कल्पताम् ।

गीत क्रमांक- 2

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रहन तेजधारी
क्षतित्र महारथी हों अरिदल विनाशकारी
होवें दुधारू गौऊवें पशु अश्व आशवाही
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही

बलवान सभ्य योद्धा राजमान् पुत्र होवें
इच्छानुसार वर्ष पर्जन्य ताप धोवें

फलफूल से लदीं हों ओषध अमोद्य सारी
होयोगक्षेम कारी स्वाधीनता हमारी

ऋषि दयानन्द की मान्यताः- मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता है कि जो न काल में सबको एक सा मानने योग्य हैं मेरा कोई नवीन कल्पना वा तमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है को मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना को अभीष्ट है ॥ **स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश** ॥

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक - 3

ध्वजेयं मुदा वर्धते व्योमवातैः
समाड्डीयमानान्तरिक्षे विशाले ।
महामण्डले दीप्त दिव्यारूणाभे,
सुभासैरेवरभा सतं ओइम् पताका ॥1॥
प्रबंद्धार्यवर्तक देशे प्रशस्ता,
समस्तार्य वीरै र्धृता या समन्तात्
पुराज्ञान ज्योतिः प्रदत्त पृथिव्यां,
सुधा वेदवाण्या नुता गीयतेच ॥2॥
समुद्धर्तुकामा व्यंचार्य वीराः
समन्थाप्यतां विश्व में तत्प्रसुप्तम ।
इयं सार्य राष्ट्रांग भूता ध्वजा ऽऽस्ते
परा शक्तिरूपा ददातु स्वशक्तिम ॥3॥
महामंगले विश्वशान्त्येक मुर्ते,
सुकीर्तिः सदा वर्धतां ते प्रशस्या ।
समुद्घोषणा घोष्यते वीर घोषैः
विजजीयतां नः पताकापतापा ।

गीत क्र0 - 4

अमृत बेले जाग अमृत बरस रहा ।
छोड़ निंद का राग अमृत बरस रहा ॥

चार बजे की पीछे सोना ।
है अपने जीवन को खोना ।
झट खटिया को त्याग अमृत बरस रहा ॥1॥

नीरस जीवन में रस भरले ।
धार धर्म भवसागर तरले ।
त्यज मिथ्या अनुराग अमृत बरस रहा ॥2॥

www.thearyasamaj.org
वेद ज्ञान की ओढ़ चदरिया ।
छोड़ कपट चल प्रेम डगरिया ।
धो कुसंग के दाग अमृत बरस रहा (3)

परोपकार का लक्ष्य बनाले ।
ऊंचा अपना आप उठाले ।
शुभ कर्मो में लाग अमृत बरस रहा (4)

बड़े भाग से नर तनु पाया ।
ऋषि मुनियों ने यही बताया ।
राख इसे बेदाग अमृत बरस रहा (5)

गीत क्र0-

निद्रा से जाग प्यारे, अब हो गया सवेरा
अब हो गया सवेरा ।।
ईश्वर का भजन करले कल्याण होगा तेरा ।

भक्ति से ही मुक्ति है, है इसके लिये ही जीवन ।
गफलत को छोड़ उठ जा, इक दिन उठे तन डेरा ।।
इक दिन उठे तन डेरा ।।। (1)

मानव का जन्म पाया, कुछ धर्म ना कमाया ।
पशु सम क्यों बिताया, चन्द दिन का है बसेरा ।।
चन्द दिन का है बसेरा ।।। (2)

परिवार निज बांधव, नहीं साथ देने वाले ।
रह जायेगा यही सब, कहता जिसे तू मेरा ।।
कहता जिसे तू मेरा ।। (3)

अब सन्त मुनि जन तुमको, आकर जगा रहे हें ।
भारत के लाल जागो नहीं अब रहा अंधेरा ।।
नहीं अब रहा अंधेरा ।।। (4)

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0-6

उठ जाग मुसाफिर भोर भयी ।
अब रैन कहां जो सोवत है ?
जो सोवत है सो खोवत है ।
जो जागत है सो पावत है ।

टुक निंद से अंखियाँ खोल जरा ।
और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।।
यह प्रीत करन की रीत नहीं ।
प्रभू जागत है तू सोवत है ।।1।।

जो कल करना है आज करले ।
जो आज करना है अब करले ।।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया ।
तब पछताये क्या होवत है ? ।।2।।

नादान भुगत अपनी करनी ।
ऐ पापी पाप में चैन कहां ?
जब पाप की गठरी शीश धरी ।
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है ।।3।।

गीत क्र0 - 7

ओम् हम सब ब्रम्हचारी स्वप्न से बचते रहें।
और मन को शुद्ध भावों से सदा भरते रहें ।
गाढ़ निद्रा में निरन्तर कुछ समय सोते रहें
नित्य त्यज आलस्य उत्तम काल में जगते रहें
हे प्रभो ! आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिये
शीघ्र सारे दुर्गणों को दूर हमसे कीजिये
लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बन
माता भूमि लाल इसके गोद में फूलें फलें
मातृभूमि हित मरें वरदान ऐसा दीजिये

www.thearyasamaj.org
प्रेमका दरिया बहे दिल में हमारे रात दिन.
तुमको फिर भूलें नहीं सद्ज्ञान ऐसा दीजिये.

गीत क्र0- [illegible]

जगदीश ज्ञानदाता सुखमूल शोकहारी
भगवन् सदा तुम्ही हो निष्पक्ष न्यायकारी

सब काल सर्वज्ञाता सविता पिता विधाता
सब में रमे हुये हो तुम विश्व के बिहारी । ॥1॥

कर दो बलीष्ठ आत्मा घबराये ना दु:खों से
कठिनाईयों का जिससे तरजायें सिन्धु भारी ॥2॥

निश्चय दया करोगे हम मांगते यही हैं
हमको मिले स्वयं भी उठने की शक्ति सारी । ॥3॥

गीत क्रमांक- 9

जगती को आज जरूरत है ।
उन आर्य वीर जवानों की ।।

जिनके उर में है आग लगी, जिनके जीवन में मस्ती है ।
तन-मन जिनका विचलित न हो, जिनकी धरती में हस्ती है ।
बिन सोचे जो शुभ कर्म करें, उन वीरों की दीवानों की ॥1॥

भयभीत न हो मृत्यु से, सच्चे ईश्वर विस्वासी हों ।
जो संकट में न घबराये,दु:ख सुख के जो अभ्यासी हों ।
ऐ वीरों आज जरूरत है बिस्मिल से फिर परवानों की ॥2॥

जो ऐक्य भावों को लेकर,मानवता को झकझोर सके ।
अज्ञान अविद्या की गर्दन, निर्मम बन तोड़ मरोड़ सके ।
धरती को आज जरूरत है, ऐसे उद्भट विद्धानों की ॥3॥

www.thearyasamaj.org
[illegible]ी पर, जो रण में गर्जन कर सकते ।
झट चीर कलेजा अड़चन का, वे वीर जो आगे बढ़ सकते ।
धरती को आज जरूरत है, उन शूरवीर गुणवानों की (4)

गीत क्रमांक-10

भारत की मिट्टी चन्दन है ।
इस मिट्टी का अभिनन्दन है ।।
यह वीरों की जन्म भूमि है ।
यह आर्यों की आदि भूमि है ।।

रामकृष्ण भीष्म अर्जुन ने इस मिट्टी में जन्म लिया ।
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को इस मिट्टी ने जन्म दिया ।
बल पौरूष की कर्म भूमि है मर्यादा की धर्म भूमि है (1)

वाल्मीकी और वेदव्यास ने गौरव इसे प्रदान किया ।
दयानन्द स्वामी शंकर ने शास्त्रार्थ अभियान किया ।
वीरों की संदेश भूमि है पुण्य भूमि साधना भूमि है । (2)

वीर शिवा, राजा प्रताप इसकी ही गोदी में खेले ।
गुरू गोविन्द बन्दा बैरागी अपने प्राणों पर खेले ।
उत्सर्गों की तीर्थ भूमि है संघर्षों की समर भूमि है (3)

इस मिट्टी पर बिस्मिल और अशफाक ने जीवन वार दिया ।
भारत के हित जीये उसी के हित मरना स्वीकार किया ।
शेखर की यह समर भूमि है भगत सिंह की क्रान्ति भूमि है (4)
दुर्गावती लक्ष्मीबाई ने यहां भारी संग्राम किया ।
आजादी के लिये लड़ी शत्रु का काम तमाम किया ।
अबलओं की सबल भूमि है यश कीर्ति से धवल भूमि है ।
वीर हकीकत मतिराम ने बोटी बोटी कटवा दी ।
तपे तवे पर गुरू अर्जुन ने अपनी देह झुलसवा दी ।
आत्म दान की आदि भमि है बलिदानों की महा भूमि है ।।

www.thearyasamaj.org
लाल बाल ने विपीन पाल ने अकथनीय संकट झेले ।
विजय वाहिनी ले सुभाष ने अण्डमान के पट खोले ।म
नर नत्नों की खान भूमि है भूमण्डल की शान भूमि है ।।

गीत क्रमांक- 11

देश हमारा धरती अपनी हम धरती के लाल,
नया संसार बसायेंगे नया इन्सान बनायेगें ।

सौ - सौ स्वर्ग उतर आयेंगे, सूरज सोना बरसायेंगे ।
दूध पूत के लिये पहन कर जीवन की जयमाल
रोज त्यौहार मनायेंगे ।।1।। देश हमारा.....

सुख सपनों के सुर गूँजेगें, मानव की महनत पूजेंगे ।
नयी चेतना नये विचारों की हम लिये मशाल,
समय समय को राह दिखायेंगे ।।2।। देश हमारा .....

एक करेंगे मनुष्यता को सीचेंगे ममता समता को ।
नयी पौध के लिये बदल देंगे तारों की चाल,
नया भूगोल बनायेंगे ।।3।। देश हमारा .....

गीत क्रमांक- 12

चांद सितारों जैसी इसकी शान बनायेंगे ।
स्वर्ग समान अपना देश बनायेंगे ।।

दूर उठाकर ले जायेंगे हम पंछी पिंजरा अपना ।
जब तक हैं पर साथ हमारे आजादी फिर क्या सपना ।
आज सुगन्ध ये ले आ आज सुगन्ध ये ले आ ।
मांगी हुई रिहाई से तो प्राण गंवायेंगे । ।।1।।

जिन बागों की कलियां के होटों पर हो गम के साये ।
पतझड़ की तानाशाही में फूल न जिन पर खिल पाये ।
गमन कर माली आगम न कर माली आ
फसले बहार बनकर तुमको हम दिखलायेंगे ।।2।।

www.thearyasamaj.org

[illegible]री क्यों मांग रहे हो किस्मत से ।
आओ बनादो पहले जैसा इसको अपनी हिम्मत से ।
सोने की चिड़िया आ । सोने की चिड़िया आ
देश के माथे से मिलकर हम दाग मिटायेंगे ॥3॥

गीत क्रमांक 13

यह गगन हमारा है यह धरती अपी है ।
इसकी हर संध्या भोर सुहानी अपनी है ।।

सूरज की किरणें देख रही, धरती के बेटे बदल रहे ।
नदियों की धड़कन तेज हुवी, सागर के सीने उबल रहे ।।
आजाद इरादों का, बन्धन स्वीकार नहीं
दुश्मन की गरदन पर तलबार उतरनी है ॥1॥

जीने दो और जीयो स्वयं भी भारत भू की वाणी है ।
लेकिन हमको अन्यायी सत्ता की धूल उड़ानी है ।।
हमको तो जीवन की, दुर्बलता स्वीकार नहीं
अपने पुरखों की तरह, फिर अमरता बरनी है ॥2॥
आओ अटल प्रतिज्ञा ले, दुश्मन का दर्प मिटाने को ।
आजादी पर ही जाने को, आजादी पर मिट जाने को ।।
विप्लव की आंधी रूके, हमको स्वीकार नहीं,
हमको तो रावण की, फिर लंका जलानी है ॥3॥

गीत क्रमांक- 14

हमको है अभिमान देश का ।
जिसके पांव पखारे सागर
गंगा भरे संवारे गागर
शोभित जिस पर स्वर्ग वहीं तो
शीश मुकुट हिमवान देश का ॥1॥

www.thearyasamaj.org

जिसके रज कण का कर चन्दन
झुक झुक नभ करता पद वन्दन ।
कली कली का प्राण बोलता
स्वर्ग रश्मि का गान देश का (2)

कोटि बाहों में शक्ति इसकी
कोटि प्राणों में भक्ति इसकी ।
कोटि कोटि कण्ठों में गुन्जित
मधुर-मधुर जयगान देश का (3)

इस पर तन मन प्राण निछावर
भाग्य और भगवान निछावर
सींच खून से हम देखेंगे
मुख पंकज अम्लान देश का (4)

गीत क्रमांक-15

राष्ट्र को ऊंचा उठाना कर्तव्य है हमारा ।
जातीयता प्रान्तीयता जातीयता और प्रान्तीयता के भेद
भाव को (छोड़ो) गूँज उठे जग सारा (छोड़ दो)

अब कदम मिलाकर चलते जाओ । रूकने का बस नाम ना लो ।
सूरज की तरह कर दो प्रकाश । पलभर का भी विश्राम न लो

देश के ऊपर मर मिट जाना इन्सानों का काम है ।
जलते दीपक पर जल जाना परवानों का काम है सावधान.
हो जावो सावधान हो जावो तुम्हें देश की रक्षा करना है ।
अब दुनियां ने ललकारा ।।

अब समय नहीं सोने का प्यारों करवट लाओ
आंख उठाओ- (2) करो संगठन बैर बिसा दो
देश काल की ओर निहारो (2) छल कपट से तुम्हे
मिटाना शत्रु ने है ठाना ।
उसका कलेजा चीर के वीरों आगे बढते जाना ।

www.thearyasamaj.org

बिगड़ी बात बनाओ -(2)
तुम्हें इस देश की रक्षा करना ।
अब दुनियां ने ललकारा ।।

गीत क्र0 16

हर आरजू से प्यारी है आबरु वतन की ।
जिंदगी तो है उसी की और मौत भी वतन की ।

जिंदा न रहने देगें जो देश का द्रोही है ।
वो हाथ काट देगें ऊँगली अगर उठाई ।
हर इंसा है सिपाही रक्षा करे वतन की ------(1)

जागे तो जय-जय बोलो सोये तो जय-जय बोलो ।
मंदिर मसद् गुरुद्वारे जिसके भी द्वार खोले ।
हर द्वार से गुँजाए जय-जय हो इस सतन की -----(2)

भगवान दो हम को शक्ति इस देश को सँवारे ।
हर स्वार्थ से पहले हम देश को निहारें ।
सब कुछ करें न्यौछावर गर मांग है वतन की । ----(3)

गीत क्र0 - 17

रूड़ियों को तोड़ दो परपरांए मोड़ दो
जिसमें देश का भला न हो वो काम छोड़ दो

भूलकर भी मुख पे जाति-पाती की न बात हो
भाषा प्रान्त के लिये कभी न रक्तपात हो
एकता के स्वर में गीत गुनगुनाना सीख लो
युग के साथ मिलके अब कदम बढ़ाना सीख लो
फूट का घड़ा जो भर चुका है उसको फोड़ दो
जिसमें देश का .....

www.thearyasamaj.org

आ रही है जिसमें चारो ओर से यही पुकार
हम करेंगे त्याग मातृभूमि के लिये हजार
कष्ट जो मिलेंगे मुस्कुराके ही सहेंगे हम
देश के लिये सदा जीयेंगे और मरेंगे हम
देश की अब आन पर हर खुशी को छोड़ दो
जिसमें देश का .....

आज हमको देखिये हम देश की तकदीर हैं
आने वाली कल की जीती जागती तस्वीर है
हमसे ही बनी हुयी है आज देश की यह शान
आने वाले युग का हम ही करेंगे निर्माण
भेदभाव भुला के सारे बन्धनों को तोड़ दो
जिसमें देश का भला.....

गीत क्र0-18

ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम ।
तेरी राहों में जां तक लुटा जायेंगे ।।
फूल क्या चीज है हम तो तेरे लिये ।
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे ।।

सह चुके हैं बहोत गम सितम गैर के ।
अब करेंगे हर इक वार का सामना ।।
झुक सकेगा न अब सरफरोशों का सारब ।
चाहे हो खूनी तलवार का सामना ।।
सर पे बांधे कफन हम तो हंसते हुये ।
मौत को भी गले से लगा जायेंगे ।।
कोयी पंजाब से कोयी महाराष्ट्र से ।
कोई यू.पी.और कोई बंगाल से ।।
तेरी पूजा की थाली में लाये हैं हम ।

www.thearyasamaj.org

फूल हर रंग के हर इक डाल से ।।
नाम कुछ भी सही पर लगन एक है ।
ज्योति से ज्यात दिल की जगा जायेंगे ।।2।।

हम रहे ना रहे इसका कुछ गम नहीं ।
तेरी राहों को रोशन कर ही देंगे हम ।।
खाक में मिल गयी जिन्दगानी तो क्या ।
मांग तेरी सितारों से भर ही देंगे हम ।।
रंग अपने लहु का तुझे देंगे हम ।
तेरी गुलशन की रौनक बढ़ा जायेंगे ।।3।।

हम वह जों बाज हैं जो तेरे नाम पे ।
जिसके मैंदां में मिट्टी तेरी चूमके ।।
तुझको आजाद देखें इसी चाह में ।
शूनियों पर भी चढ़ जायेंगे झूमके ।।
शम्मा जलती रहे तेरे हर दौर से ।
तेरे परवाने खुद को मिटा जायेंगे ।।4।।

गीत क्र0- 19

निज राष्ट्र के शरीर के श्रृंगार के लिये
तुम कल्पना करो कल्पना करो नवीन कल्पना करो ।।

बढ़ती चले कतार देश की पुकार पर
धुन छेड़ दो नयी समष्टि के सितार पर
पीछे किया करो श्रृंगार द्वार द्वार पर
पहले जले दिया जले शहीदों के मजारों पर
जो देश पर चढ़ा गये शरीर फूलसा
तुम बन्दना करो, बन्दना करो, कृतज्ञ वन्दना करो ।

ओ देश की जवानियों बढ़ो उठो उठो
संघर्ष की कहानियों बढ़ो उठो-उठो

www.thearyasamaj.org

अंधकार की सदा न भीख मांगते रहो
अन्याय से न जन्म जन्म भागते रहो
संसार भी अगर कहीं मुकाबला करे
तुम सामना करो सामना करो समर्थ सामना करो ।।

अब देश है स्वतंत्र मे दीनि स्वतंत्र है
आकाश है स्वतंत्र चांदनी स्वतंत्र है
हर द्वीप है स्वतंत्र रोशनी स्वतंत्र है
अब शक्ति की ज्वलन्त दामिनी स्वतंत्र है
लेकर अनन्त शक्तियां सदा समृद्ध की
तुम कामना करो कामना करो यशस्वी कामना करो ।।

गीत क्र0-20

जननी जन्म भूमि स्वर्ण से महान है ।
इसके लिये तन है मन है धन है और प्राण है ।
तन मन धन प्राण हैं ।।

इसके कण कण में लिखा रामकृष्ण नाम है ।
हुतात्माओं के रूधिर से भूमि शस्य श्याम है ।
धर्म का यह धाम है सदा इसे प्रणाम है ।
स्वतंन्त्र है धरा यहां स्वतंन्त्र आसमान है ।।

इसकी गोद में हजारों गंगा जमुना झूमली ।
इसके, पर्वतों की चोटियां गगन को चूमती ।
भूमि यह महान है निराली इसकी शान है ।
इसकी विजय पताका पर विजय का निशान है ।

इसकी आन पर अगर जो कोई बात आ पड़े ।
इसके सामने जो जुल्म के पहाड़ हों खड़े ।
शत्रु सब जहान हों विरूद्ध आसमान हो ।
मुकाबला करेंगे हम जान में यह जान हैं ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 21

लो प्रणाम वतन पे मरने वालों की ।
बुझ ना सकेगी कभी शमा जो हमने की रौशन ।

बलिदानों से हमको मिला देश हमारा ।
इस वास्ते ये देश हमें प्राणों से प्यारा ।-----।। ध्रु0 ।।

इस देश के लिये राणा ने वैभव को तजा था
शिवाजी पहाड़ियो में युद्ध करता फिरा था ।
इस देश के लिये लड़ी थी झांसी की वो रानी
हंस - हंस के दीवारों में चिन्ह गये कहते गुरुवाणी ।
भारत का दुनिया भर में इतिहास निराला ------।1।

इस देश के लिये लाखों ही घर बार लुटे थे ।
इस देश के लिये लाखों ही घर बार लुटे थे ।
इस देश के लिये बच्चों से मां बाप छूटे थे ।
इस देश के लिये विधवा हुई हजारों बहनें ।
इस देश के लिये छोड़ दिये पहनने गहने ।
मिला था भारत देश को मुक्ति का किनारा------।2।

इस देश के लिये खून शहीदों ने दिया था ।
इस देश के लिये जौहर सतियों ने किया था ।
इस देश के लिये नींद जवानों ने तजी थी ।
नेताजी पे पोशाख सिपाही की सजी थी ।
गूंजा था कोने-कोने से जय हिंद का नारा ।----।3।

www.thearyasamaj.org

दूर हुई थी तभी वतन से गुलामी ।
अंग्रेजों ने दी राष्ट्र के झंडे को सलामी ।
हिन्दू हो मुस्लिम सिख हो चाहे हो ईसाई ।
बोलेदान कर दो धर्म जाति और नेताई ।
इंकलाब जिंदाबाद- इंकलाब जिंदाबाद ।
अखंडता और एकता का एक दो नारा ।-----(4)

गीत क्र0 22

भारत म्हारो देश फूटरोवेश के धन धन भारती ।
बोलो जय जय कार उतारो आरती ।

सोना उगले धरती अंबर मोतीड़ा बरसावे रे ।
मुलके सूरज चांद गीत कोयलड़ी मीठा गावे रे ।
हिमगिरी योगीराज शिश पर ताज की गंगा वारती ।
समदरियां री लेहरां चरण पखारती हो उतारो----(1)

कुण भूलेरो राणाने चेतक ने हल्दी घाटी ने ।
वीर शिवा सौ शूर अठै दुनिंया पूजै इण माटी ने ।
रण चण्डी रो मोड दुर्ग चित्तौड़ की मौत निहार ती ।
जौहररी लपटांने रोज निहारती हो उतारो-----(2)

तिलक गोखले भगतसिंह बापू झांसी री महारानी ।
जौहर देख जवाना रोतू बता कठै इतणो पाणी ।
गातो उपदेश कृष्ण संदेश कृष्ण सो सारथी ।
आज भारत री धरा विश्व ललकारती हो उतारो------(3)

अभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता-पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है । **व्यवहारभानु**

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 23

ओ नीला घोड़ा रा असवार म्हारा मेवाड़ी सरदार ।
ओ म्हारी सुणता ही जा ज्यो जी राणा जी म्हारी -----।

ए राणा थारी दकाल सुणते अकबर धूज्यो जाये ।
हल्दी घाटी रंगी खूणस्यूं नालो बेतो जाये ।
चाली मेवाड़ी तल्वार बेग्या खूणारा खेंगाल
ओ म्हारी सुणता ही ---------()। ()
ए झालो गयो सुरगा माही पातल लोह लवाय
चेतक तनस्युं बहे की नालो करतब बरण्यो न जाये
म्हाने जीवासूं नहीं प्यार म्हाने मरनो है इकबार
ओ म्हारी सुणता ही --------()2()

ए शक्ति सिंह की गर्दन झुकगी पड़यो पगाँ में आय ।
गले झूम ग्यो प्यार लूमग्यो बचन न मोहंडे आय
दोन्यू आयूडा ढलकाय वांरी वांहा कुण छुड़वाय
ओ म्हाणी सुणता ही ---------()3()

गीत क्र0- 24

धरती की शान तू है मनु की सन्तान
तेरी मुट्ठियों में बन्द तूफान है रे
मनुष्य तू बड़ा महान है, भूल मत ()ध्र0()

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ो को फोड़ दे ।
तू जो चाहे नदियों की मुख को भी मोड़ दे ।
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे ।
तू जो चाहे धरती से अंबर को जोड़ दे ।
अमर तेरे प्राण ()2() मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे.....()।()

www.thearyasamaj.org
नैनों में ज्वाला तेरी गति में भूचाल ।
तेरी छाती में छिपा महाकाल है ।
धरती के लाल तेरा हिमगिरी सा भाल ।
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है ।
निज को तू जान (2) जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आव्हान है रे......(2)

धरती सा धीर तू है अग्नि सा वीर ।
अरे तू जो चाहे काल को भी थाम ले ।
पापों का प्रलय रूके पशुता का शिश झुके ।
तू जो अगर हिम्मत से काम ले
गुरू सा मतिमान् (2) पवन सा तू गतिमान
तेरी नभ से भी ऊंची उड़ान है रे......(3)

गीत क्र0-25

मेरा रंग दे बसंती चोला (धू0)

बड़ा ही गहरा दाग है यारों जिसका गुलामी नाम है
उसका जीना भी क्या जीना जिसका देश गुलाम है ।
सीने में जो दिल था यारों आज बना वो शोला (1)

जिस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे ।
जिसे पहन झांसी की रानी मिट गयी अपनी आन पे ।
आज उसी को पहन के निकला हम मस्तों का टोला (2)

दम निकले इस देश के खातिर बस इतना अरमान है ।
एक बार इस राह पे मरना सौ जन्मों के समान है ।
देख के वीरों की कुर्बानी अपना दिल भी बोला (3)

इसे पहन कर मिटे सैकड़ों जलियां वाले बाग में ।
कूदे सर पे कफन बांध के इन्कलाब की आग में ।
इसे पहन कर खुदीराम भी बन्देमातरम बोला (4)

www.thearyasamaj.org
[illegible]ली खायी मदन गोपाल ने ।
इसे पहनकर वार किया था बिस्मिल और आजाद ने ।
इसे पहनकर भगत सिंह ने फेंका बम का गोला (5)

बेड़ी और हथकडी में बस एक यही झनकार है ।
इस चोले को वही पहनता जिसे देश से प्यार है ।
वीर वही संगीन के आगे जिसने सीना खोला (6)
हाथ में गीता गले में फांसी मन में ये उद्गार थे ।
जिस धरती पे मिटूँ मैं उसमें जन्मू अनेकों बार से ।
चाहे जब भी जन्मू लेकिन मिले बसन्ती चोला (7)

गीत क्र0 - 26

चित्रकार चित्र ऐसे हाथ से उतार दें ।
केसरिया हो रंग लाल शोणित से निखार दें ।।

चित्र में हो दयानन्द वेद का प्रचार करे ।
मिटा कर अधर्म जग में धर्म का प्रसार करें ।
श्रद्धानन्द गुरुकुल खोले शिक्षा का विस्तार करें ।
आर्यवीर लेखराम दलितों का उद्धार करें ।
महाराजा सूरजमल और पन्ना के विचार दें (1)

चेतक पर प्रताप राणा-रण के लिये जाते हों ।
घास की रोटी महाराणा के भूखे बच्चे खाते हों ।
दीवारों में फतहसिंह जोरावर चिने जाते हों ।
हकीकतराय धर्म हेतु प्राणों को गंवाते हों ।
बंदा बैरागी की खाल चिमटों से उतार दें (2)

लक्ष्मी बाई महारानी का युद्ध होता हुआ भारी
तात्या टोपे वीर बना मंगल पाण्डे क्रान्ति [illegible]
काले पानी जाते हुए वीर सावरकर [illegible]
तिलकजी आंदोलन हेतु करते हों जयघोष [illegible] ।
शिवाजी की माता जीजाबाई रचनाकार दें (3)

www.thearyasamaj.org

लाला लाजपतराय पर पुलिस लाठियाँ बरसाती हो ।
सांडर्स की मृत्यु बनकर भगत की गोली आती हो ।
आजाद है आजाद ये शेखर की ध्वनि आती हो ।
मार दो गोली श्रद्धानन्द की खुली हुई छाती हो ।
डायर को लन्दन में जाकर ऊधम सिंह मार दे ।।4।।

राम प्रसाद बिस्मिल फांसी ऊपर गाना गाते हों ।
सुभाषचन्द्र बोस सेना जर्मन में बनाते हों ।
राजगुरू सुखदेव भगत सिंह हंसकर फांसी जाते हों ।
लोह पुरूष सरदार पटेल भारत एक बनाते हों ।
ऋषि दयानन्द जैसे निरंजर विचार दें ।।5।।

गीत क्र0- 27

एक डाल के हम हैं पंछी, अलग अलग अपनी भाषाएं ।
एक दूजे को साथ में लेकर एक ही स्वर में गाये ।।
ला ला ला.....

गलत मत कदम उठाओ, सोचकर चलो, विचार कर
चलो, राह की मुसीबतों को पार कर चलो ।

हम पे जिम्मेदारियां है देश की बड़ी ।
हम पे जिम्मेदारियां है धर्म की बड़ी ।
हम पे आने वाली आशिकी नजर पडी ।
चिराग ले चलो ।।आग ले चलो।।
ये मस्तियों के रंग भरे फाग ले चलो गलत.....।।1।।

मिले चलो एक साथ अब नहीं रूको ।
बढ़ते चलो एक साथ अब नहीं थको ।
अन्याय का हो सामना न तुम कहीं झुका ।
साज करेगा ।।आवाज करेगा।।
हमारी वीरता पे जहां नाज करेगा गलत.....।।2।।

www.thearyasamaj.org

मंझिल के मुसाफिर तुझे क्या राह की फिकर ।
चट्टान के तूफान के झोंकों का क्या जिकर ।
ठोकर से ऊंचा चढ़ता है दुनियां में हर बशर ।
वो कौन आ रहा मंझिल पे छा रहा
वो कौन मंझिलों पे मंझिले बना रहा गलत .... ◊3◊

काल की करवाल से इन्सान कब डरा ?
तू प्रलय के बादलों को छोड़ तो जरा ।
लाख मौत हो मगर मनुष्य कब मरा ।
ज्योत तो जला ◊पंथ तो चला◊
प्रेम का पला भला वो सूर्य कब ढला .....◊4◊

गीत क्र0 28

जो भरा नहीं भावों से बहती जिसमें रक्त धार नहीं
वह हृदय नहीं पत्थर है जिसमें देश का प्यार नहीं

जाग उठो ऐ नौजवानों आई घड़ी बलिदान की
माटी मांग रही कुरबानी भारत देश महान् की ।।ध्रु।।

आज सदियों से जमाने में हमको पहचाना है
शाने वतन पर एक जन्म क्या लाखों जन्म लुटाना है
रहेगी कायम रीत युगों की रीत शहीदी शान की ------◊1◊

आज हमारे देश की सरहद गर किसी ने पार की ।
फिर देखेगी शान ये दुनिया राणा शिवा के तल्वार की ।
गूंज उठेगी झांसी की रानी पड़ी जो नजर शैतान की ।----◊2◊

गूंज उठा कोने-काने से गीता का संदेश है ।
कर्मण्ये वाधिका रस्ते मा फलेषु कदाचन ।
राम की पावन मर्यादा में बंधा हुआ यह देश है ।
माटी नहीं ये माटी चंदन भारत देश महान की । ----◊3◊

www.thearyasamaj.org
अनेक अनेक भाषा बोली के लोग यहां पर रहते हैं ।
समय समय पर देश की खातिर मिल कष्टों को सहते हैं ।
एक थे हम एक रहेगें कसम तिरंगे की शान की -----(4)

गीत क्र0-29

तुमको कितनी बार जगाया तुमको कितनी बार
जगाया तुमको कितनी बार ।।

वेदों का आदेश यही है गीता का उपदेश यही है ।
अर्जुन का संदेश यही है । चलते नहीं भई क्यों
तुम कृष्ण के शिक्षा के अनुसार जगाया ....(1)

अस्सी घाव लगे थे तनमें फिर भी व्यथा नहीं थी मन में ।
कनवा भागे भीषण रण में तुम्हें बचाने को निकली
थी सांगा की तलवार जगाया........(2)

शंकर ने जीवन दे डाला आत्मपतन से तुम्हें संभाला
अंधकार में किया उजाला/कुम्भकर्ण की निद्रा
से करो न अब तुम प्यार जगाया......(3)

शत्रु हृदय दहलाने वाला अकबर से पड़ते ही पाला
चमक उठा था जिसका भाला उस प्रताप के रणविक्रम को
तुमने दिया विसार जगाया ...... (4)

विश्वविदित शिवराज बली थे रण में कृष्ण समान छली थे
जिसके सब उद्योग फले थे रण भूमि में गूंज उठा था
उसका जय जय कार जगाया .... (5)

जिसके तीर खड्ग के आगे अपने प्राण यवन ले भागे
फिर भी मारे गये अभागे उस बन्दा ने मचा दिया था
रण में हाहाकार जगाया ...... (6)

www.thearyasamaj.org
[illegible] ईट बरसाने वालों दूध में जहर पिलाने वालों
वेद विरूद्ध मत के मत वालों दयानन्द स्वामी ने दिया था
तुम पर जीवन वार जगाया .... (7)

समय नहीं है अब सोने का गफलत में अवसर खोने का
गया जमाना अब रोने का दस्यूदलन से हल करने दो
आर्य भूमि का भार जगया .....(8)

गीत क्र0 - 30

एक साथ उच्चार करें
हम ऐस व्यवहार करें
एक मन्त्र का घोष करे (कृण्वन्ती)
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्........(घ्रू0)

आज नहीं प्राचनी समय से वेद हमारा साथी ।
दूर दूर तक फैलाई थी वैदिक धर्म की ख्याति ।
किन्तु चक्र जब घूम पड़ा तो लक्ष्य हुआ था ओझल ।
जाग उठी अब दृष्टि हमारी नहीं रही वो बोझल
एक साथ उच्चार करें .....(1)

वेद और उपनिषद सिखाते जो गन्तव्य हमारा ।
रामायण और गीता सिखलाती शुभ कर्तव्य हमारा ।
मिले विश्व में दूर दूर तक वैदिक संस्कृति के अवशेष
प्रेरित करते रहो सदा ही देकर जागृति का संदेश
एक साथ उच्चार करें............(2)

खण्ड खण्ड क्यों आज हो रही भारत भूमि कल्याणी ।
धर्म विमुख क्यों आज हो रहे आर्य धर्म के अभिमानी ।
कार्य हमें ऐसा करना फिर भारतवासी नेक बन
संगच्छध्वं धर्मोरक्षति ऋषियों का संदेश सुने ।
एक साथ उच्चार करें...........(3)

www.thearyasamaj.org
अखिल विश्व में एक बार फिर उन्नत ओ म् ध्वजा डोले ।
अखिल विश्व में एक बार फिर वैदिक धर्म की जय बोले ।
वेदों के अनुशीलन से हम नित्य नये आविष्कार करें
एक बार धरती का मानव भारत का जयकार करें ।
एक साथ उच्चार करें .....(4)

गीत क्र0-3।

ऋषि ऋण को चुकाना है आर्य राष्ट्र बनाना है ।
तो मिल के बढ़ो मंझल पे चढ़ो चढ़ने का जमाना है ।
देश के कौने-कौने में संदेश सुनाना है ।।

हम कस कर कमर चले हैं निकले हैं ।
इस मारक में ले मजबूत इरादा ।
हम कभी न विचलित होंगे ना होंगे
परवाह नहीं चाहे आये कितनी बाधा ।
हमारा वेद खजाना है, जो सबसे पुराना है ।
तो मिलके बढ़ो.....(1)

असमानता की ये खाई हां खाई
अब पटनी है समाज के आंगन में ।
मजहब की ये दीवारें हां दीवारे
नहीं राखनी है माता के दामन में
पाखण्ड गढ़ ढाना है, दलितों को उठाना है ।
तो मिल के बढ़ो.....(2)

सूरज की किरण से तपकर हां तपकर
जब निकलेगा मेहनत का पसीना ।
सोना उगलेगी धरती हां धरती
खुशहाली को दूध दही का पीना ।
खेतों में कमना है, उद्योग लगाना है ।
तो मिलके बढ़ो.....(3)

www.thearyasamaj.org
आपस के झगड़े सारे हो सारे
पन्चायत में अपने आप निपटाओ ।
इस दहेज के चक्कर से टक्कर से
यह विनती करें समाज को बचाओ ।
मंहगे का जमाना है ना लुटना लुटाना है ।
तो मिलके बढ़ों .... (4)

गीत क्र0-32

जिस दिन वेद के मंत्रों से धरती को सजाया जायेगा ।
उस दिन मेरे गीतों का त्यौहार मनाया जायेगा ।।

खेतों में सोना उगलेगा झूमेगी डाली डाली ।
वीरानों की कोख में पैदा जिस दम होगी हरयाली ।
विधवाओं के मस्तक पर चमक उठेगी जब लाली ।
निर्धन की कुटिया में जिद दिन दीप जलाया जायेगा ।।

खलियानों की खाली झोलीं भर जावेगी मेहनत से ।
इन्सानों की मजबूरी जब टकरायेगी दौलत से ।
सदियों का मासूम लड़कपन जाग उठेगा गफलत से ।
भूखे बच्चों को जिस दिन भूखान सुलाया जायेगा ।।

जिस दिन काले बाजरों में रिश्वत खोर नहीं होंगे ।
जिस दिन मदिरा के सैदाई तन के चोर नहीं होंगे ।
जिस दिन सच कहने वालों के दिल कमजोर नहीं होंगे ।
झूठी रस्मों को जिस दिन नीलाम कराया जायेगा ।

विस्मील और भगत सिंह की कुरबानी की पूजा होगी ।
राजगुरू सुखदेव की जिन्दगानी की पूजा होगी ।
वीर शिरोमणि लक्ष्मीबाई रानी की पूजा होगी ।
दयानन्द के सपनों को साकार बनाया जायेगा ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 33

सदाचार का शासन भारत की धरती पर आयेगा ।
चाहे जितना जोर लगा ले रोक नहीं कोई पायेगा ।
ऋषियों की भूमि पर भ्रष्टाचार नहीं चल पायेगा ।।

देश भक्ति फिर भर जायेगी सारे वीर जवानों में ।
एक से बढ़कर एक ये लेंगे रूचि सदा बलिदानों में
हर एक वीर जवान को वीर सुभाष बनाया जायेगा ।।1।।

नशों और विषयों से देश के वासी मुक्ति पायेंगे ।
देश भक्ति के गीतों से ये सारा देश गुंजायेंगे ।
भगत सिंह सुखदेव सावरकर का रंग सब पर आयेगा । ।।2।।

खून खराबे अत्याार का ना लेगा कोई नाम यहां•।
अन्याय और अनाचार का होगा पूर्ण विराम यहां ।
भारत की भूमि को फिर से स्वर्ग बनाया जायेगा ।।3।।

चलेगा न आतंक वाद अलगाववाद इस धरती पर ।
कोई काला दाग न होगा इसकी उज्जवल तखती पर ।
प्रेम प्यार भाई चारे का दीप जलाया जायेगा । ।।4।।

ना होगा अज्ञान कहीं और चलेगा न पाखण्ड यहां ।
देश भक्तों की टोली में कोई होगा न जयचन्द यहां ।
पुरखों के सपनों को फिर से साकार बनाया जायेगा । ।।5।।

खान पान निर्मल होगा निर्मल होगा व्यवहार यहां ।
पवित्र धरती भारत मां की टिके नहीं गद्दार यहां ।
भारत मां की जय का फिर जयघोष लगाया जायेगा । ।।6।।
कोई किसी से द्वेष और नफरत कभी ना दिल में पालेगा ।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सबको गले लगायेगा ।
सबको आर्य बनालेगा, सबको श्रेष्ठ बनालेगा ।
भारत वर्ष का ध्वज फिर सारी दुनियां पर लहरायेगा । ।।7।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक - 34

हम इतिहास लिखेंगे
हमें स्वार्थ की घटा हटाकर नइे प्रभा छिटकानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

हमने मनुके चारू चरित शिक्षण को चुना चुनौति में
हिमगिरी का उत्तुंगशिखर है हमको मिला बपौति में
हम ऊंचे आदर्शो को नभ से भूतल पर लाते हैं ।
हम पिता की खुशियों की खातीर भीष्म प्रतिज्ञा करते हैं
इतिहास बनाने वाले हम बनते इतिहास कहानी हैं ॥2॥

हम शैशव में गिन सिंहों के दांत अनेकों बार हंसे
हम यौवन में शूर्पाणखाओं ऊर्वशियों में नहीं फसे
हम गुरूवर वशिष्ठ केचेले नहीं राज्य पर मरते हैं
अग्रज की ले चरण पादुका चौदह वर्ष गुजरते हैं
आतंकवादी, जातिवादी दुनियाँ हमें मिटानी है ॥2॥

सागर की छाती पर पत्थर तैराना अपनी थाती
हमसे ही सोने की लंका राख में मिलाई जाती
अत्याचारी दुःशासन का रक्त चाटने वीर यहँा
शरणागत के रक्षण हित रण में डटते हम्मीर यहँा
यहँा राष्ट्र की बलि वेदी पर बलि देते बलिदानी हैं ॥3॥

हम सीमा के प्रहरी पुरूका स्वाभीमान दर्शायेंगे
मौर्य शौर्य के साथ राष्ट्र गुरू गौरव गान सुनायेंगे
संघर्षो से आजीवन झूझे मेवाड़ी मतवाले
खोकर सिंह सिंहगढ़ की मर्यादा को रखने वाले
वीर प्रतापों शिवराजों की हमने गाथा गानी है ॥4॥

हमें व्यक्ति पूजा से हटकर राष्ट्र अर्चना करनी है
जाति नहीं मानव में गुण गौरव की गरिमा भरनी है

www.thearyasamaj.org

शोषण अत्याचार निरंकुशता हिंसा तानाशाही
ये अभारती तत्व यहाँ इनकी होली जलाई जाती
होली के इन मस्त जवानों में नव ज्योति जलानी है ॥5॥

चाटु कारिता के दिन बीते अन्ध समर्थन का युग बीता
अपनों के द्वारा अपनों की बात सुनने का युग बीता

राष्ट्र भारती के आराधक दयानन्द के हम सैनानी
हम नूतन इतिहास लिखेंगे और भरेंगे नई रवानी
नहीं कृपा पर स्वाधिकार पर हिन्दी बतानी रानी है ॥6॥

गीत क्र0-35

नील गगन के नीचे तुम सब मिलकर गाओ ।
देश की खातिर जान भी देने से मत घबराओ आओ ।
असके अर्पण तन मन धन सब कुछ अपना जुटाओ ।।

भारत के तुम वीर सिपाही आगे बढ़ते जाओ
देश के शत्रु देश के द्रोही सब को मार भगाओ ।।

अपनी प्यारी आजादी को हम आँच ना आने देंगे ।
अपने प्यारे भारत को सब मिलकर सफल बनाओ । आओ ।।

अन्धकार के घेरे में लाखों इन्सान फँसे हैं ।
ज्ञान का दीप जलाकर के तुम सबको राह दिखाओ ।।

परीक्षाः- पाँच प्रकार की है इसमें से जो ईश्वर उसके गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या, दूसरी प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टिक्रम, चौथी आप्तों का व्यवहार और पाँचवी अपनी आत्मा की पवित्रता इन पाँच परीक्षाओं से सत्या असत्य का निर्णय करके सत्यकाग्रहण असत्य का परित्याग करना चाहिये ।

॥ महर्षि दयानन्द सरस्वती ॥

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 36

भारत के काने कोने से हम सब बच्चे आये हैं ।
नयी उमंगो आशाओं का हम संदेशा लाये हैं ।। ध्रु0 ।।

हम गिरी की ऊँचाई लाये हम सागर की गहराई ।
हम पूरब से आये लाये प्रातः किरण की अरूणाई ...{ । }

हम पश्चिम से आये लाये आग राग राजस्थानी ।
हम लाये हैं गंग यमुन के संगम का निर्मल पानी ...{ 2 }

कल आने वाली दुनियां में हम कुछ कर दिखलायेंगें ।
भारत के ऊँचे माथे को ऊँचा और उठायेंगे ...{ 3 }

गीत क्र0 37

फूलों से तुम हंसना सीखो भौरों से तुम गाना ।
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना ।----{।}

धुंए से तुम शिक्षा पाओ ऊंची मंजिल जाना
वायु के झोंको से सीखो हरकत में ले आना । -----{2}

मेहंदी के पत्तों से सीखो पिस पिस रंग चढ़ाना ।
वृक्षों की ढाली से सीखो फल पाकर झुक जाना । ----{3}

पतझड़ में पेड़ों से सीखो दुख में धीर बंधाना ।
सुई और धागे से तुम सीखो बिछुड़े गले मिलाना----{4}

मुर्गे की बोली से सीखो ब्राम्ह मुहर्त उठ जाना ।
ऋषिवर दयानन्द से सीखो देश धर्म पे बलि जाना ।---{5}

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 38

छोटे छोटे पांव है अपने
आगे मंजिल बड़ी बड़ी ।
निकल पड़ो रे छांव से बाहर
धूप बुलाती खड़ी खड़ी ।।

जहां जहां भी आंसू होंगे
हम पहुँचेगे वहीं वहीं ।
फूलों पर जो शूल बिछे हों
आगे बढ़ते रहे वहीं
देख रही है हमको दुनियां चौरस्ते पे खड़ी खड़ी ।।

जिस मिट्टी में जन्म लिया है उसका कर्ज चुकायेंगे ।
हम गुलाब की कलियां है
इस धरती को महकायेंगे
जीवन आगे बढ़ जाता है
मौत सिसकती पड़ी-पड़ी ।।2।।

आओ हम सब काम करें अब
देश को स्वर्ग बनायेंगे
ऊंच नीच के भेद भाव को
मिलकर आज मिटायेंगे ।
बिखर रही है मोती की लड़ियां
हम जोड़ेगें कड़ी कड़ी ।।3।।

कम से कम 25 वर्ष पर्यन्त पुरूष और सोलह वर्ष पर्यन्त कन्या को ब्रह्मचार्य सेवन अवश्य करना चाहिये और अड़तालीसवें वर्ष से अधिक पुरूष और चौबीस से अधिक कन्या ब्रह्मचर्य का सेवन न करे किन्तु इसके उपरान्त गृहाश्रम का समय है । ।। व्यवहारभानु ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 39

अनुशासन है जीवन धन अनुशासन प्राण हमारा है ।
अनुशासन का पालन करना हमने आज विचारा है ।

अनुशासन ही बल पौरूष है वीर पुरूष की थाती है ।
अनुशासन ही ज्योतिर्मय जलते दीपक की बाती है ।
अनुशासन ही सबल राष्ट्र का सच्चा जीवन साथी है ।
अनुशासन युत जाति जगत में जीवित जागृत जाती हैं ।
अनुशासन है प्राण वीरदल का प्राणों से प्यारा है ।

अनुशासन ही सैनिक और सेना-पतिका भी शासक है ।
आर्यवीर दल का अनुशासन ही संचालक पालक है ।
अनुशासन ही दल का शिक्षक सुख साधक है ।
राष्ट्र समुन्नति के मग में अनुशासन हीन प्रबाधक है ।
अनुशासन रवि शशी तारों का कण कण का रखवाला है ।

आर्य वीर दल से अनुशासन का पालन करना सीखें ।
अनुशासन पालन करने में जीना और मरना सीखें ।
अनुशासन है तप अनुशासित जीवन युत जीना अच्छा ।
वीरों की है श्री शोभा अनुशासन पर मरना अच्छा ।
दल का केवल एक यही अनुशासन सबल सहारा है ।।

गीत क्र0- 40

संगठन हम करें आपदों से लड़े हमने ठाना ।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।

वीर प्रताप के शेर जागों वीर वन्दा की [illegible] शेर जागो ।
बज रहा है बिगुल जानवां तु निकल रण [illegible] ना ।।

शेर शिवराज की तेग खड़के ध्वनी हर हर महादेव भड़के
शक्ति हो साथ में ओ म् ध्वज हाथ में बढ़ते जाना ।।

www.thearyasamaj.org

चाहे आंधी या तूफान आये वर्षा ओले या बादल हों छाये ।
हम रूकेंगे नहीं और झुगेंगे नहीं बढ़ते जाना ।।

आर्य वीरों ने यह राग गाया बैदिक राज्य का डंका बजाया ।
हम जीयें या मरें छल बलों से लड़े हमने ठाना ।।

गीत क्र0-41

निर्माणों के पावन युग में
हम चरित्र निर्माण न भूले
स्वार्थ साधना की आंधी में
वसुधा का कल्याण न भूलें ।।

माना आगम अगाध सिन्धु है,
संघर्षों का पार नहीं है ।
किन्तु डूबना मझधारों में,
साहस को स्वीकार नहीं है ।

जटिल समस्या सुलझाने को,
नूतन अनुसंधान न भूलें ।।1।।

शील विनय आदर्श श्रेष्ठता
तार बिना झंकार नहीं है
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी ।
यदि नैतिक आधार नहीं है
कीर्ति कौमुदि की गरिमा में
संस्कृति का सम्मान न भूलें ।।2।।

आविष्कारों की कृतियों में,
यदि मानव का प्यार नहीं है ।
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है ।
प्राणी का उपकार नहीं है
भौतिकता के उत्थानों में
जीवन का उत्थान न भूलें ।।3।।

www.thearyasamaj.org

निकल रहा सूरज प्राची में गया अंधेरा काला ।
हम आये किरणों के पथ से लेकर नया उजाला ।

इक ज्योति जगाएंगें
मानव के मन में फैला हम तिमिर मिटायेगें ।----।। ध्रु0 ।।

यह देश है देवों का जिसने अमृत का पान किया ।
सब ही सुखी निरोग बनें वेदों ने ऐसा गान किया ।
आज सुप्त मानवता को हम पुनः जगायेगें -----।1।

ढेर बना खुद ही बारुदी उस पर जा बैठी दुनिया ।
चैन भला पायेगी क्या जब खुद से ही ऐठी दुनिया ।
इस दुनिया को प्रेम प्रीति की रीत सिखायेगें----।2।

हर भाषा सिखलाती है दिल से दिल की वाणी बोलो
धर्म सिखाता है बंदे को एक तराजू पर तोलो ।
भेद भाव की दीवारों को तोड़ गिरायेगें ।------।3।

पहुंच गया इस हाथ हमारा चांद गगन चोटी पर
हाथ दूसरा मांग रहा है रोटी इस धरती पर ।
इन दोनों हाथों का मेल मिलन करायेगें ।------।4।

जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करें, क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल है । म0 दयानन्द स.प्र. नवम समुल्लास ।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 43

मन मंदिर में झांक कर देख अरे इन्सान
मानवता का हो रहा दिन प्रतिदिन अवसान
धर्म कर्म और शीलता मर्यादा सम्मान
धीरे धीरे मिट रहा ऋषियों का अरमान
कैसा माहोल ये बन रहा है
जिन्दगानी का दम घुट रहा है ।।ध्रु।।

राणा शिवा के देश में अब वीरता नहीं
गौतम दयानन्द राम की सी धीरता नहीं
आतंकवादी खेल में कोयी जीतना नहीं
इतिहास के प्रमाणों से कुछ सीखता नहीं
हर कदम पर जहर धुल रहा है जिन्दगानी.....।।1।।

माला जपे प्रभू नाम की शैतान बन गया
दु:खीयों का दर्द देखकर नादान बन गया
स्वार्थ की आग जब लगी है वान बन गया ।
आयी मुसीबत देखकर अनजान बन गया
आज अपनों से डर लग रहा है जिन्दगानी....।।2।।

दम्भीयों को देश का स्वराज मिल गया
अधर्मियों को भोगने को राज मिल गया
बागियों को मान और सम्मान मिल गया
पापियों को पाप का मुकाम मिल गया ।
अपनी करनी का फल पा रहा है ... ।।3।।

विश्व के विनाश का ये चक्र चले रहा ।
मानवों में दानवों का रक्त बह रहा
दुष्टता विलासिता का ज्वार चढ़ रहा
वेद के सुनीतियों का मोल घट रहा
हर दिलों में फर्म आ रहा है जिन्दगानी....।।४।।

www.thearyasamaj.org

अमन के अब दुश्मनों का साथ छोड़ दे
सम्प्रदाय जातियों का बन्ध तोड़ दे
फैली विषैली वायु का प्रवाह मोड़ दे
वैदिक धर्म का देश में संग्राम छेड़ दे
इस सच्चाई से क्यों हट रहा है जिन्दगानी.....(5)

गीत क्र0- 44

ऐ वतन के नौजवां, जा रहा है तू कहां ?
याद कर वो दासतां, जिसको गाता है जहां (1)

थरथराती थी जमी, जब कदम धरता था तू ।
काल भी हो सामने पर, नहीं डरताथा तू ।
आज भी करते बयां, ये जमी और आसमां (1)

रहजनों हमलावरों का, सर झुकाया था कभी ।
बाजूरों कुव्वतने तेरी, नभ हिलाया था कभी ।
तू मगर बढ़ता गया, हाथ ले तीरों कमान (2)

तूने रखी लाज अपने, बहनों के सिन्दूर की ।
चाल भी चलने न पायी, दुष्ट पापी क्रूर की ।
उनकी वो खर मास्तयां, मेट डाली हस्तियां (3)

क्या कहूँ बेमोल तेरा, आज कैसा रंग है ।
रंगे महफिल में भी तेरा, रंग सब बद रंग है ।
खो दिया सब हौसला, शिवा और प्रताप का (4)

गीत क्र0- 45

शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना ही कठिन है ।
साधना का पथ कठिन है साधना का पथ कठिन है ।

शलभ बन जलना सरल है दीप की जलती शिखा पर ।
स्वयं को तिल तिल जलाकर दीप बनना ही कठिन है ।

www.thearyasamaj.org

है अचेतन जो युगों से लहरों के अनुकूल बहते ।
साथ ही बहना सरल है प्रतिकूल बहना ही कठिन है ।

ठोकरे खाकर नियति की युगों से जी रहा है मानव ।
है सरल आंसू बहाना मुस्कराना ही कठिन है ।

तप तपस्या के सहारे इन्द्र बनना तो सरल है ।
स्वर्ग का एश्वर्य पाकर मद भुलाना ही कठिन है ।

गीत क्र0- 46

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशान्
देखती है ये जमीं देखता है आसमां ।

लिखते चलो नौनिहाल नित नयी कहानियां ।
तुम मिटा दो ठोकरों से जुल्म की निशानियां ।
कल की तुम मिसाल हो सबसे बेमिसाल हो ।
तिनके तिनके को बना दो जिन्दगी का आशियां ।

तुम जिधर चलो उधर बने रास्ता नया ।
एक उठाये सबका बोझ वक्त है चला गया ।
सब कमायें एक साथ काम करें सबके हम
जो भी आगे बढ़ रहा है देखता उसे जहां ।।

ये निशान एक दिन जहान का अमन बने ।
ये निशान एक दिन प्रीत का चमन बने ।
हंसते हुये हम सफर गाते चले हम निडर
आगे-आगे बढ़ता चले जिन्दगी का कारवां ।।

सन्तानों को उत्तमविद्या, शिक्षा, गुणकर्मस्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता-पिता आचार्य और संबंधियों का मुख्य कर्म है ।

॥ म0 दयानन्द स.प्र. तृतीय समुल्लास ॥

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 47

अन्यायी से लड़ना सीखो, अन्यायी से लड़ना सीखो ।

लेना अपनी मंजिल पर दम बीच भंवर में अब ना जाना ।
इस अथाह संसृति सागर में पत्थर जैसे डूबना जाना ।
कूद पड़ो गहरे सागर में काष्ठ समान उभरना सीखो ।।

रस की बूंद पिलाए कोई तो तुम रस के कलश उलीचो ।
यदि अपमान करे कोई तो पकड़ जुबान हाथ से खींचों ।
उंगली दिखाए कोई तो तमक तमाचा जड़ ना सीखो ।

कायरता दो छोड़ बना धुन के पक्के मर्दाने मन के ।
गहोदीन का हाथ रहो तुम चरणों के चाकर सज्जन के ।
अधम अधर्मी उद्दण्डों से सीना तान अकड़ना सीखो ।।

झूम झूम कर मधुशाला में मधु के प्याले बहोते पी लिए ।
अपनी रंगरेली अटखेली के दिन जग में बहोत जी लिए ।
देश बंधुओं की रक्षा हित अब संकट में पड़ना सीखो ।।

पचन प्रकाश यही कवियों का नीतिशास्त्र यही कहता है ।
अत्याचारी से अति पापी अत्याचार जो की सहता है ।
देश द्रोहियों के विनाश हित कर में शस्त्र पकड़ना सीखों ।।

गीत क्र0 - 48

नारी जो बने, सुत ऐसे जने,
पितरों की आज्ञा मान रे धर्म निभाने वाले हों
कोयी रामबने, कोयी श्याम बने,
कोयी भरत लखन हनुमान रे
यश फैलाने वाले हों ...।।0।।

मिले देखने को हर घर में वैदिक शिष्टाचार
खान पान पहिराव में होवे उत्तम पुनीत आचार

www.thearyasamaj.org

सब वेद पढ़े, सुविचार बढ़े,
वेदामृत कर नित्य पानरे, आर्य कहलाने वाले हों ।।1।।

सर्वगुणों का केन्द्र बनाकर भारत को इकबार
पहले जैसा देश बना दें दुनियां का आधार
सर्व दुःख हरे, आरोग्य करें,
कर वेद निधि सेदानरे ।।2।।

स्वप्न सत्य कर रामराज्य का सबको दे दिखलाय
और नहीं तो अश्वपति का काल दिखाये ला
रसधार बहे, आनन्द रहे,
फिर प्यारा देश महान रे....
कर दिखलाने वाले हों । ।।3।।

गीत क्र0 - 49

इस तरह बनेगा स्वर्ग सभी संसार रे
सबसे पहले आर्य नेता संसद में भिजवाये जाय
भ्रष्टाचारी खोज खोज जहाजों में बिठाय जाय
ले जाकर समुन्दर बीच बांधकर डुबाये जाय
मद्य वस्तुओं के ठेके बन्द सब कराये जाय
पीते जो शराब उलटे पेड़ों पे लटकाये जाय
मास खाने वाले गरम तेल में पकाये जाय
पके हुए तनके लगभग टुकड़े सौ कराये जाय
चील कांग कुत्ते आदि जीवों को खिलाये जाय
तोड़ सुलफा सट्टेबाजों पर भी पड़े गज बकी मार रे ।।2।।
करत जो ब्लॅक् गरम खम्भों से बंधवाये जाय
गिनकर के पचास कोड़े पीठ पर लगवाये जाय
जेबकतरे चोर लुटेरे चीर कर सुखाये जाय
लुच्चा गुण्डा बेईमान गोली से उड़ाये जाय

www.thearyasamaj.org

चीजों में मिलावट करे जेल में भिजवाये जाय
डांडी मारे कमती तोले खोद के गड़वाये जाय
झूठी जो गवाही देते कोल्हू में पिसवरय जाय
पंच जो अन्याय करते होली में जलाये जाय
तोड़-चुगलखोर को खत्म करें जो दिन रात बिगाड़ दे. ।2।

डाकू और बागी के पाँव घुटनों से कटवाये जाय
मुस्टण्डे भिखारी सब काम पे लगवाये जाय
कामीनर नारी आधे धरती में गड़वाये जाय
रिश्वतखोर लोगों के तन ओर से कटवाये जाय
नंगे तन पर बेतमार कर कुत्ते पीठ छुड़ाय जाय
दलालों के हाथ केवल कोहनी से कटवाये जाय
धोखेबाज लफंगे प्लेटफार्म पे ले जाय जाय
आवे जब तूफानमेल आगे सब गिराये जाय
तोड़- सांगी और नचकैयों का करे कोयी नहीं सत्कार रे ।3।
जुवारी मटके बाज हवालात में पहुँचाय जाय
बीड़ी पीने वालों के मुँह में खूटे ठुकवाये जाय
हुक्का पीने वालों के मुँह इंजन पे बंधवाये जाय
भांग पीने वाले पक्के रोड पे सुलवाये जाय.
माल भरे ठेले उनपे सारे दिन घुमाये जाय
बूचड़खाने तोड़के प्राणगऊओं के बचाये जाय.
अलग-अलग लड़का लड़की गुरूकुल में पढ़ाये जाय
आर्यो के उत्सव सारे देश में कराये जाय
तोड़- कहे नरदेव सुखी हो फिर दुनियां के नर नार रे.

जैसे पुरूषार्थ करते हुये पुरूष का सहाय दूसरा भी करता है वैसे धर्म से पुरूषार्थी पुरूष का सहाय ईश्वर भी करता है । **महर्षि दयानन्द स.प्र.सातवाँ समुल्लास** ।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 50

सादरं समीयतां बन्दनाविधीयताम्
श्रद्धया स्व्मातृभू समर्चना विधीयताम्-----।। ध्रु0 ।।

आपदो भवन्तु वा विद्युतो लसन्तु वा ।
आयुधानि भूरिशो पि मस्तके पतन्तु वा ।
धीरता न हीयतां वीरता विधीयताम्----।।

प्राणदायिनी इयं त्राणदायिनी इयम् ।
शक्ति भक्ति मुक्तिदा सुधन न पायिनी इयम्।
एतदीये वन्दने सेवने भिनन्दने ।
साभिमानमात्मनो जीवनं प्रदीयताम् ।

गीत क0 51

कर्मयोगै मनो यस्य लग्नं सदा,
आसने तेन ध्यानं कृतं व न वा ।
सेविता येन दीना अनाथाः जनः
पुष्पदानं कृतं तेन चेद् वा न वा

देश रक्षा कृते येन दत्ताहुतिः
ह्यर्पिता येन देशाय सर्वः कृतीः
मातृभूस्तर्पिता स्वेन रक्तेन वा,
तेन धर्मस्य गानं कृतं वा न वा ।

पूर्णया निष्ठया येन सम्पादितम्
स्वीयकार्य महद् वा भवेद् वा लघु
स्वश्रमोषार्जितं येन भुक्तं धनम्
मंदिरे तेन यानं कृतं वा न वा

www.thearyasamaj.org

क्रोधलोभादिकैः यो न संपीड़ितो,
यस्य बुद्धि स्थिता येन तृष्णार्जिता
मानव सेवते ईशबुद्ध्या च यो
तेन ईशस्य ध्यानं कृतं वा न वा

गीत क्र0 - 52

आनन्द सुधासार दयाकर पिला गया
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया

अब कौन दयानन्द यति के समान है
महिमा अखण्ड ब्रम्हचर्य की महान् है

डाला सुधार वारि बढ़ी बेल मेल की
देखो समाज फूल फबिले खिला गया।

कांटे कराल जाल अविद्या अधर्म के
विद्या वधू को धर्म धनि से मिला गया ।

ऊंचे चढ़े न क्रूर कुचाली गिरा दिये
यज्ञाधिकार वेद पढ़ो को दिला गया

खोली न कहां पोल ढके ढोंग ढोल की
संसार के कुपन्थ मतों को हिला गया ।

शंकर दिया बुझाय दीवाली को देहका
कैवल्य के विशाल वदन में विला गया ।

धर्मः- पक्षपातरहित न्याय का आचरण सर्वहित में करना , सत्यभाषण आदि युक्त ईश्वराज्ञा का पालन जो वेदों से अविरूद्ध हो धर्म कहाता है ।

॥ महर्षि दयान्नद सरस्वती ॥

भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना योगी
सोतों को कर गया फिर बेदार वो मस्ताना योगी
ईट और पत्थर खाये गोलीसे ना घबराये
घातक से कर गया अपने प्यार वो मस्ताना योगी
भूले थे वेद की वाणी करते थे सब मनमानी
वेदों का कर गया फिर प्रचार वो मस्ताना योगी
विधवा उद्धार करके शुद्धि प्रचार करके
दलितों पे कर गया पर उपकार वो मस्ताना योगी
पापी थे पाप करते ईश्वर से ना थे डरते
जड़ से मिट गया अत्याचार वो मस्ताना योगी
कोयी शुभकाम ना था प्रीतीका नाम ना था
हर जा बढ़ा गया प्रेम की धार वो मस्ताना योगी
वेदों की रक्षा करके आर्यो में जीवन भरके
देश का कर गया बेडा पार वो मस्ताना योगी.

गीत क्र0 - 54

धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया
सो सो के लुट रहे थे हम तूने हमें बचा दिया
अंधों को आंखे मिल गयी मुर्दा में जान आ गयी
जादू सा क्या चला दिया अमृत सा क्या पिला दिया
वाणी में क्या तासीर थी वचन में तेरे ए ऋषि
कितने शहीद हो गये कितनों ने सर कटा दिया
अपने लहू से लेखराम तेरी कहानी लिख गया
तूने ही लाला लाजपत शेरे बबर बना दिया
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खायी गोलीयां
हंस हसं के हंसराज ने तन मन व धन लुटा दिया
तेरे दीवाने ऐ ऋषि दक्षिण दिशा को चल दिये
वैदिक धर्म पे हो फिदा दुनियां का दिल हिला दिया

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 - 55

अगर स्वामी दयानन्द ना हमारा ना खुदा होता ।
न हम होते न तुम होते न कश्ती का पता होता ।।

तिलक चोटी जनेऊ के सभी सपने लिया करते
अगर ईसा का बप्तिस्मा गले सबके पड़ा होता ॥1॥

मुहम्मद के गुलामों में हमें भी गिन लिया जाता ।
राम का नाम लेवा भी जहां में ना बचा होता ॥2॥

लिये खन्जर खड़ा होता उधर जल्लाद मक तल में ।
सरासर सामने उसके हमारा सिर झुका होता ॥3॥

फरिस्ता बनके ऐ स्वामी कहीं से तू चला आया ।
हमारे हाल पे वरना फलक भी रो पडा होता ॥4॥

समय पर आपकी नजरे जो ना मुझको उठा लेतीं ।
मैं खुद अपनी ही जनरों यकीनन गिर गया होता ॥5॥

अभी कुछ भी नहीं हूँ मैं पथिक फिर भी बहुत कुछ हूँ ।
अगर कुछ बन गया होता तो ना जाने मैं क्या होता ॥6॥

गीत क्र0 - 56

जहां घोषणा राम के नाम की थी
जहां कामना कृष्ण के काम की थी
अहिंसा जहां शुद्ध बुद्धार्य की थी
प्रशंसा जहां शंकराचार्य की थी
यहां देव ने दिव्य योगी उतारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ॥1॥

www.thearyasamaj.org

अनायास चेता गया एक चूहा
गिरी भूल ऊंची चढ़ी उच्च ऊहा
जड़ी भूत-भूतेश की शक्ति जागी
महादेव के प्रेम की भक्ति जागी
उठे इष्ट की ओर सीधे सिधारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे .....॥2॥
हितु बन्धु माता-पिता मित्र छोड़े
लगे मुक्ति की खोज में बन्ध तोड़े मुक्ति
भले भोग त्यागे गहि योग शिक्षा
फिर देश में मांगते धर्म भिक्षा ये लाई न नीचे आयेगी
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ।.....॥3॥

टिका टेक ठाना उसी ओर जाना
जहां ठीक पाना सुना था ठिकाना
मिले योगियों से निकाली सच्चाई
मिटा अन्ध विश्वास सूझी सच्चाई
कहये विरजानन्द के शिष्य प्यारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे .....॥4॥

मनोभावना साधना से मिलाई
सुधा ध्यान को धारणा की पिलाई
समाधिस्थ हो ब्रह्म से लौ लगाई
मिली सम्पदा सिद्धियों की नभाई
टिके एकता में मिटा भेद सारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे .....॥5॥

रहे आदि से अन्त लौ ब्रह्मचारी
पढ़ी वेद विद्या अविद्या बिसारी
कहा सज्जनों से बनों स्वर्ग भोमि
भजो सच्चिदानन्द को मुक्ति होगी
न होना कभी आलसी यों पुकारे प्रतापी... ...॥6॥

www.thearyasamaj.org

लुटेरे मतो का किया टांच ढीला जुटेरे
लताड़ी छुआ-छूत की झूठी लीला
दिखा दोष पाखण्ड का खोज खोया
खलो पाठ खोटे खलों को दगोया
प्रमादी पछाड़ किसी से न हारे ।
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ....(7)

प्रसादी जो प्रेम की बांटते थे ।
घृणा से किसी को नहीं ताड़ते थे
सजीला सदाचार को मानते थे
न चोखा किसी चिन्ह को मानते थे
कभी वस्त्र धारे कभी थे उघारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ....(8)

न खाता किसे काल कूटस्थ अत्ता
बही सिन्धु में बिन्दु की भक्ति मत्ता
दिया न्याय का नीचता ने बुलाया
दया और आनन्द देह अन्त आया
दिवाली हुई जबकि होली पुकारे
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे ....(9)

गीत क्र0 57

उठो दयानन्द के सिपाहियों समय पुकार रहा है
देश द्रोह का विषधर फन फैला फंकार रहा है ----।। ध्रु0 ।।

उठो विश्व की सूनी आंखे काजल मांग रही है
उठो अनेको द्रुपद सुताएं आंचल मांग रही हैं
मरघट को पनघट सा कर दो जग की प्यास बुझा दो
भटक रहे हैं जो मरुस्थल में उनको राह दिखादो
गले लगा लो उनको जिनको जग दुत्कार रहा है-----(1)

www.thearyasamaj.org

तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो
तुम चाहो तो खारे जल को सोम बना सकते हो
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो
जातिवाद जग की नस नस में ज़हर उतार रहा है----॥2॥

याद करो क्यों भूल गये जो ऋषि को वचन दिया था
शायद वायदा याद नहीं जो आपने कभी किया था
वचन दिया था ओ३म् पताका कभी ना झुकने देगें
हवन कुंड की अग्नि घरों से सभी ना बुझने देगें
लहू शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है ------॥3॥

कैसे आग भुजा पाओगे आग बहुत लगी है
उजली उजली दिखने वाली हर चादर मैली है
लेखराम का लहू पुकारे आंख जरा तो खोलो
एक बार फिर मिलकर सारे दयानन्द की जय बोलो
वेद ज्ञान का व्यथित सूर्य अब तुम्हें निहार रहा है ----॥4॥

गीत क्र0 58

तुम इतने महान बन आए ।
हम तुमको पहचान न पाए । ----।। ध्रु ।।

तुमने अमृत हमें पिलाया हमने तुमको जहर पिलाया ।
फिर भी तुमने शाप न देकर वेद सुरभि से हम महकाये-----॥1॥

तुमने प्रेम भरे हृदय से जिनके जीवन दीप जलाए ।
प्राण तुम्हारे लेकर वे ही हंसे प्रथम पीछे पछताए -----॥2॥

www.thearyasamaj.org

तुमने अपना वैभव यौवन मानव हित में सदा लुटाया ।
मानव ने पत्थर बरसाये तुमने उनपर रत्न लुटाये ------(3)

अभी तलक भी लगा न पाया यह हृदय जयकार तुम्हारा।
काम तुम्हारा पूरा करके जय-जय कार तुम्हारा गायें ।-----(4)

गीत क्र0- 59

प्रभु जी इतनी सी दया कर दो
हमको भी तुम्हारा प्यार मिले
कुछ और भले ही मिले ना मिले
प्रभु दर्शन का अधिकार मिले

जिस जीवन में जीवन ही नही
वह जीवन भी क्या जीवन है
जीवन तब जीवन बनता है
जीवन का जब आधार मिले (1)

जिसने तुमसे जो कुछ मांगा
उसने है वही तुमसे पाया
दुनियां को मिले दुनिया लेकिन
भक्तों को तुम्हारा प्यार मिले (2)

हम जनम जनम के प्यासे है
और तुम करूणा के सागर हो
करूणा निधि से करूणा रस की
इक बूँद हमें इकबार मिले (3)

सब कुछ पाया इस जीवन में
बस एक तमन्ना बाकी है
पल दो पल भीतर आने को
अनुमति अनुपम सरकार मिले (4)

www.thearyasamaj.org
[illegible]ते
सदियां ही नहीं युग बीत गये
मिल जाये पथिक मंझिल अपनी
हमको जो तुम्हारा द्वार मिले (5)

गीत क्र0 - 60

दयाकर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना ।। ध्रु

हमारे ध्यान में आओ प्रभु आंखों में बस जाओ ।
अंधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना । (1)

बहा दो प्रेम की गंगा दिलों में प्रेम का सागर
हमें आपस में मिल जुलकर प्रभु रहना सिखा देना । (2)

हमारा धर्म हो सेवा हमारा कर्म हो सेवा
सदा ईमान हो सेवा व सेवक वर बना देना । (3)

वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना
वतन पर जॉ फिदा करना प्रभु हमको सिखा देना (4)

गीत क्र0 - 61

ओम् है जीवन हमारा ओम् प्राणाधार है
ओम् है कर्ता विधाता ओम् पालन हार है
ओम है दुःख का विनाशक ओम् सर्वानन्द है
ओम् है बल तेजधारी ओम् करूणाकन्द है.
ओम् सबका पूज्य है हम ओम् का पूजन करें
ओम् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपनामन करें
ओम के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन
बुद्धि नित प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन
ओम के जपने से अपना ज्ञान बढ़ता जायेगा
अन्त में प्रिय ओम् हमको मोक्ष तक पहुँचायेगा

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक- 62

ओम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली
ले लो रे कोई ओम का प्यारा, आवाज लगाऊँ गली-गली
माया के दीवानों सुन लो, इक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और रूप खजाना, धरा यहीं रह जायेगा
सुन्दर काया माटी होगी , चर्चा होगी गली-गली ।। ले लो...

क्यों करता है मेरी-मेरी,तज दे इस अभिमान को
छोड़ जगत के झूठे धन्धे,जप ले प्रभु के नाम को
गया समय फिर हाथ न आये, फिर पछताये घड़ी-घड़ी ।। ले लो....

मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी, एक दिन तुझे भुलायेंगे
कल तक जो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली ।। ले लो.

जिसको तू अपना कह कह कर तू इतना इतराता है
छोड़ दे बन्दे साथ विपद में साथ नहीं कोई जाता है
दो दिन का यह रैन बसेरा, आखिर होगी चला चली ।। ले लो....

गीत क्रमांक- 63

जगत साकार बनाया है निराकार प्रभू
क्या अजब खेल रचाया है निराकार प्रभू

1. लेता अवतार है भगवान कयी कहते हैं
   साफ वेदों ने बताया है निराकार प्रभू

2. काम करता है बिना हाथ और पावों के
   देखो रामायण में आया है निराकार प्रभू

3. चांद सरज सितारों और जलथल में
   तेज चहूँ और दिखाया है निराकार प्रभू

4. देखना चाहते हैं जो बाहर की आंखों से
   उनको दृष्टि में न आया है निराकार प्रभू

www.thearyasamaj.org

5. कहा था श्रुतिने की नतस्य प्रतिमा अस्ति
किसी बन्धन में ना आया है निराकार प्रभू

6. ज्ञान चक्षु से ही उसे हम देख सकते हैं ।
मनके मन्दिर में समाया है निराकार प्रभू.

गीत क्रमांक - 64

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता
जीवन में लगे ठोकर ना कहीं
जाने अनजाने में मुझसे
नुकसान किसी का होना कहीं

1. उपकार सदा करता जाऊं
दुनियां अपकार भले ही करे
बदनामी ना होवे जग में मेरी
कोयी मान भले ही देन कहीं मुझे

2. तू ही बस मेरा ऐसा है
दु:ख में भी साथ नहीं त्यजता
दुनियां मुझे प्यार करे ना करे
खोऊं तेरा भी न प्यार कहीं मुझे

3. जो तेरा बनकर रहा है
कांटों में फूल सां खिलता है ।
कितने ही कांटे पांच लगे
पर फूल भी हो कांटे न कहीं मुझे

4. मन हो मधु पूर्ण कलश मेरा
आंखों में ज्योति छलकती रहे
तुमसे मधु ऐसा पीने को
जगता ही रहूँ सोऊ न कहीं मुझ

www.thearyasamaj.org

5. मैं क्या हूँ राह मेरी क्या है
यह सत्य सदा मैं समझ सकूँ
इस राह पे चलते चलते कभी
मेरे पांव थक रूके ना कहीं मुझे.....

गीत क्र0 - 65

मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा को तेरी पालना
कर कर कमाई धर्म की झोली में तेरी डालना
मानव के नाते ऐ प्रभो जाऊँ कहीं मैं भूल भी
इतनी विनय है आपसे बनकर सखा संभालना
जितने भी यज्ञ कर्म हो श्रद्धा व प्रेम से करूँ
आये अभद्र भाव जो उनको सदा ही टालना
रक्षा को मेरी तू करे रक्षा में तेरी मैं रहूँ
अपने ही सांचे में प्रभो जीवन को मेरे ढालना
मृत्यु का भय ना मुझको हो मांगता केवल वर यही
मेधा बुद्धि की हे प्रभो झोली में भिक्षा डालना.

गीत क्रमांक - 66

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा ले के आया हूँ ।
पिला दो ज्ञान का अमृत पिपासा ले के आया हूँ ।

1. रतन अनमोल लाल लाने वाले भेंट को तेरी,
मैं केवल आंसूओं की मंजुमाला लेके आया हूँ ।

2. जगत् के रंग सब फीके, तू अपने रंग में रंग दे ।
मैं अपना बेमहा बदरंग बना लेके आया हूँ ।

www.thearyasamaj.org

पास रहता हूँ तेरे सदा मैं अरे,
तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूं ।
मूढ़ मृगतुल्य चारों दिशाओं में तू,
ढूढने मुझको जाये तो मैं क्या करूं ।

1. कोसता दोष **देता** मुझे है सदा,
मुझको यह ना दिया मुझको वह ना दिया ।
श्रेष्ठ सबसे मनुजतन तुझे दे दिया,
सब्र तुझको न आये तो मैं क्या करूं ।

2. तेरे अन्त करण में विराजा हुवा,
करन यह पाप करता हूँ संकेत में ।
लिप्त विषयों में हो सीख मेरी भली,
ध्यान में तू न लाये तो मैं क्या करूं ।

3. जांच अच्छे बुरे कर्मो की हो सके,
इसलिये बद्धि मैने तुझे दी अरे ।
किन्तु तूमन्द भागी अमृत छोड़कर,
घोर विष आप खाये तो मैं क्या करूं ।

4. फल फल शाक मेवा व दुग्धा दि सम,
दिव्य आहार मैने तुझे हैं दिये
तू तम्बाकू अमल मद्य मांसा दिखा,
रोग तनमें बसाये तो मैं क्या करूं ।

5. अति मनोहर सरस भव्य दृश्यों भरा,
विश्व सुन्दर प्रकाशार्थ मैने रचा ।
अपनी करतूत से स्वर्ग वातावर
नरक तू ही बनाये तो मैं क्या करूं ।

हे मांसहारियों! तुमलोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मास भी छोड़ोंगे वा नहीं ? ‖ **म0 दयानन्द गोकरूणानिधि** ‖

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक - 68

यह जीवन तुम्हारा तुम्हीं को है अर्पण
लगा दो किनारे से ओ मेरे भगवन्

1. हो करूणा के सागर दया के हो दाता
तुम्हीं जग के पालक तुम्हीं ही विधाता
यह सोया है मानव इसे तुम जगा दो लगा दो किनारे

2. मैं पथ से गिरूं तो मुझे थाम लेना
दया कर के सद् बुद्धि देते ही रहना
जो सच्चा है मारेंगे उसे तुम दिखाओ लगा दो ।

3. तुम्हारे भरोसे है जीवन की नैया
लगा दो किनारे से मेरे खिवैय्या
कहीं डुब नारां इसे अब बचा दो लगाये ।

4. दरस दो बड़ा होगा एहसॉ तुम्हारा
भटकना ही रहता है मनवा हमारा
इसे वश में करने की युक्ति बता दो
लगा दो किनारे से ओ मेरे भगवन्

गीत क्रमांक - 69

मेरे दाता के दरवार में सब लोगों का खाता ।
जैसा जिसके भाग्य में होता वैया ही फल पाता ।।
क्या साधु क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी ।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी ।।
बड़े वे हैं जो जमा खरच का सही हिसाब लगाता - मेरे दाता के...

नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी ।
उसके अपने लेन-देन की, रीत बड़ी है बांकी ।
पुण्य का बेड़ा पार करे वो पास की नाव डुबाता - मेरे दाता के...

www.thearyasamaj.org

बड़ा कड़ा कानून प्रभु का, बड़ी कड़ी मर्यादा ।
किसी को कोड़ी कम नहीं देता, किसी का न कोड़ी ज्यादा ।
इसीलिए तो इस दुनियां का, नगर सेठ कहलाता - मेरे दाता के.....

फेरता वही हिसाब सभी का, एक आसन पै डट के ।
उनका फैसला कभी न पलटे, लाख कोई सर पटके ।
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता - मेरे दाता के.....

अच्छी करनी करियो रे लाला करम न करियो काला ।
लाख आंख से देख रहा है, तुझे देखने वाला ।
अच्छी करनी करो चतुर नर, समय गुजरता जाता ।
मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता-

गीत क्र0 -70

अवगत कराता तुम्हें साथीयों
अपने आज विचारों से
छोड़ लेखनी खेलना होगा।
तुमको भी तलवारों से ।। ध्रुव ।
पलट देख इतिहास देश पर,
जब जब आफत आयी है ।
कलम रखी रह गयी मेज पर,
सूख गयी थी स्याही है ।
मात तात का रिस्ता भूला.
और न जाना भाई है।
कुरूक्षेत्र के समरणांगण में,
जमकर हुयी लड़ाई है।
न्याय कमाना होगा तुमको,
खंजर और दुधारों से छोड़ लेखनी...

राष्ट्र विभाजन को तत्पर है,
उगवादी खालीस्थानी

www.thearyasamaj.org

जलियावाला बाग की जैसे
वे भूल गये हैं कुरबानी
जहां राष्ट्र हित बने अनेकों
वीर अमर हैं बलीदानी
उसी राष्ट्र को तोड़ डालने
दुष्टों ने मन में डानी
तुम्हें चुनौति देते वे अपने घातक हथियारों से छोड़..
ताल ठोक लो एक बार तो,
लंकेश्वर का नाश हुआ ।
पुर्तगाल मंगोल सदा के लिये
तुम्हारा दास हुआ ।
तुगलक मुगलवंश वीरजन
तेरा ही तो ग्रास हुआ।
अंग्रेजों ने भी हार खायी
तो उसका पदोफाश हुआ ।
झूझना होगा आर्य जनों को
घर में छिपे गद्दारों से छोड़.....

गीत क्र0- 7।

क्या पूछे हो जनाबे अली सभी तरह बरबाद हूँ में ।
मेरी मां का नाम है आजादी उसका बेटा आजाद हूँ मैं ।।

आजादी को दुःखी देख दुःख भारी मेरे मन में है ।
घर तो मेरा जेल में है या प्रताप वाले बन में है ।
बुझती नहीं बुझाने से लगी ऐसी आग बदन में है ।
दौलत खाना क्या पूछो दौलत खाना लंदन में है ।
आजादी की पौध की इक छोटी सी यादगार हूँ मैं ।।

ऋषियों की सन्तान के घर में चोरी कर ली चोरों ने ।
भारत की सम्पत्ति लूटली चटनी चाट चटारों ने ।

www.thearyasamaj.org

हरी भरी फुलवारी म्हारी नष्ट करी है ढोरो ने ।
खून बहाया बुरी तरह अफसोस फिरंगी गोरों के ।
इन गोरों की फास खोलने वाला इक फसाद हूँ मैं ।।2।।

इतनी खबर मुझे है मेरी मैं कौमी परवाना हूँ ।
जलती हुई शमा के ऊपर आज हुआ दीवाना हूँ ।
करके दमन दुष्टों का लूं मैं कौमी परवाना हूँ ।
ऋषि दयानन्द और श्रद्धानन्द का जाना पहचाना हूं ।
रामकृष्ण उस वीर बहादुर अर्जुन की औलाद हूँ मैं । ।3।।

दुखियों के दु:ख दर्द की कोई पीड पराई क्या जाने ?
कसा बहाल मुर्ग मछली की आताताई क्या जाने ।
भला नहीं जो खुद इंसा औरों की भलाई क्या जाने ।
बच्चा पैदा होने का दु:ख बांझ लुगाई क्या जाने ।
देवेन्द्र तुफान कहैं इक दुनियां की इमदाद हूँ में ।।4।।

गीत क्र0- 72

गंगा की कसम, यमुना की कसम
ये ताना बाना बदलेगा
तू संभल जरा और होश में आ
फिर सारा जमाना बदलेगा गंगा की.....।।ध्रू0।।

ये लगी नुमाईश भूखों की ये उजड़े चमन बेकारों के
तन पर कपड़ा नहीं मुरझाये शहजादे सुर्ख बहारों के ।
होली खून पसीनों की नीलामी हुस्न हसीनों की ।
बेजार न हो बेजार न हो सारा अफसाना बदलेगा ।।

ऊँचे हैं इतने महल की हर इन्सान का जीना मुश्किल है ।
मजहब की अंधेरी गलियों में ईमान का बचना मुश्किल है ।
रफ्तार जरा कुछ और बढ़ा आवाज जरा कुछ और चढ़ा ।
शीशा ही नहीं साकी ही नहीं सारा भपखाना बदलेगा ।

www.thearyasamaj.org

सूरज की मशाले जलती है जिस दम को जवानी चलती है ।
पूरब से लगाकर पश्चिम को सबकी तकदीर बदलती
तूफान को आंख दिखाने दे बिजली को तड़क कर आने दे ।
मंजिल ही नहीं मजलिस ही नहीं पूरा ही तराना बदलेगा ।।

गीत क्र0- 73

भले बुरे कर्मो की जग में जिस नरकों पहचान नहीं है ।
व्यसनों का त्याग किया नहीं जिसने पशु है वह इन्सान नहीं है ।

गंगा नहाने जाते हैं तो नहाकर व्रतकर आते हैं ।
बैंगन लौकी पेठा की सब्जी आकर नहीं वे खाते हैं
व्हीस्की मुर्गी बकरा सुअर मछली को चट जाते हैं
फिर भी चाहने भला अपना ऐसा भोला भगवान नहीं है व्यसनों का ।।1।।

एकादस पूर्ण मासी व्रतकीन्हा खूब निभाया है ।
सुबह से लेकर श्याम तलक भी अन्न न कुल खाया है ।
गांजा सुलफा चरस तंबाकू पीकर समय बिताया है ।
जिसने जगत रचाया है उस परम पिता का ध्यान नहीं है ।
व्यसनों का.....।।2।।

फस रहे जो नर विषयों में व्यर्थ प्रभुगुण गाना है ।
जिसने किया परहेज नहीं बेकार दवाई खाना है ।
चिड़ियों ने चुग खतलिया तो पीछे क्या पछताना है ।
राघव समय कीमती था पर ध्यान दिया नादान्नरी है ।

जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते । **।। व्यवहारभानु भूमिका ।।**

www.thearyasamaj.org

आर्य वीरों उठो-------
वतन में जो गद्दार बढ़ें सर उनका कुचलो----।।ध्रु0 ।।

आज राष्ट्र में फिर खतरे के बादल मंडराये हैं
देखो विदेशी ताकतों ने अपने झंडे फहराये हैं
गौतम कपिल के गुलशन में लग गई है आग देख लो
फिर हजारों बहनों के लुट रहे सुहाग देख लो
उनकी रक्षा के हित सर पे कफन बांध के जूझो-----।1।

बढ़ते इस आतंकवाद को तुम्हें मिटाना होगा
क्रूर भेड़ियों को गलती का सबक सिखाना होगा
सावधान जयचंद कोयी फूट बीज का न बोने पाये
गद्दारों का सपना यहां साकार न होने पाये
मांग समय की फर्ज भी है समय को मत चूको ----।2।

आज बहिन की राखि का ऋण तुम्हें चुकाना होगा
टूट चुका जो रक्षा का विश्वास दिलाना होगा
बता दो उजड़े परिवारों को कष्ट कोई ना झेले
मासूमों के रक्त से कोई कभी फाग ना खेले
कसम तुम्हें मातृभूमि की एक पल भर ना रुको ।-----।3।

कभी निजाम को घुटनों के बल चला दिया था तुमने
लाजपत लेखराम श्रद्धानन्द का लहू पुकारे तुम्हे
घड़ी परीक्षा की कर्मठ आई फिर आज दुबारा
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लगा दो फिर से नारा
आगे बढते चलो जहालत के कूड़े को फंको-----।4।

www.thearyasamaj.org

जागो तो एक बार जागो जागो तो ।

जागे शंकर दयानन्द जागे ।
नास्तिक मत पाखण्डी भागे ।
हुआ वेद का जय जय कार जागो.....।1।

जागे थे प्रताप शिवाजी ।
जीत गये मुगलों से बाजी ।
रूक गये अत्याचार जागो.....।2।

जागी थी झांसी की रानी ।
इकली थी पर हार न मानी ।
चमक उठी तलवार जागो.....।3।

जागे थे गुरू गोविन्द प्यारे ।
देश पे चारों बच्चे वारे ।
वार दिया परिवार जागो.....।4।

जागे थे भगत सिंह प्यारे ।
असेम्बली में लग गये नारे ।
हुआ बम का धुआं धार जागो ।.....।5।

सुभाष चन्द्र नेताजी जागे ।
अंग्रेजों के छक्के छुड़ा गये ।
गयी गोरों की सरकार जागो .....।6।

आर्य वीरों जगो जगाओ ।
ऊंच नीच का भेद मिटाओ ।
करो देश उद्धार जागो.....।7।

मनुर्भव- जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है । सत्यार्थ प्रकाश भूमिका ।

www.thearyasamaj.org

हो रही धरा विकल, हो रहा गगन विकल
इसलिये पड़ा निकल, है आर्यो का वीर दल ।

असंख्य कीर्ति रश्मीयां, विकीर्ण तेरी राहों में ।
सदैव से विजय रही है, वीर तेरी बाहों में ।।
प्रवाह जोश का प्रबल इसलिये पड़ा निकल ।
है आर्यो का वीरदल ये आर्यो का वीर दल ।।

ऋचायें वेद की लिये, सुगन्ध होम की लिये ।।
जिधर से हम पड़े निकल, जले अनेक ही दिये ।
सभी प्रकार से कुशल, सभी प्रकार से सबल ।
है आर्यो का वीर दल, ये आर्यो का वीर दल ।।

गीत क्र0- 77

उठो जवानों करों प्रतिज्ञा जग को आर्य बनाना है ।
भूले भटक भ्रान्त पथिक कोफिर सन्मार्ग दिखाना है ।

मतवादों का अन्ध कुहांसा दिशा बोध भूला मानव ।
वैदिक सूर्य विभा चमकाकर निज कर्तव्य निभाना है ।।

मत पन्थो की पगडंडी में उलझ रहा मनु पुत्र सखे ।
वैदिक राजमार्ग पर लाकर लक्ष्य सिद्धि तक लाना है ।।

एक उपास्य ओ३म् हम सबका आर्य नाम अति प्यारा है ।
गायत्री गुरू मन्त्र नमस्ते अभिवादन बतलाना है ।।

धर्म ग्रन्थ हैं वेद हमारा वैदिक धर्म सनातन है ।
भाषा संस्कृत एक एकता सप्तक यह सिखलाना है ।।
एक पिता के पुत्र सभी हैं हम समान भाई भाई ।
सुख दुख मिलकर बंटे सारे यो जग स्वर्ग बनाना है ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0 - 78

आई फौज दयानन्द वाली
अब रस्ता कर दो खाली ।।टेक।।
वेदों पर विश्वास हमारा
बलिदानी इतिहास हमारा
हम से उसके माली अबरस्ता

धर्मयुद्ध में जब डट जाना
फिर ना पीछे कदम हटाना
चाल चले मस्तानी
अब रस्ता कर दो खाली

लेख राम की ढाल बनो तुम
श्रधानन्द की चाल बनो तुम
मत भूलो दीवाली अब रस्ता

गीत क्र0 - 79

सिर जावे तो जावे मेरा वैदिक धर्म ना जावे
धर्म की खातिर बाल हकीकत
सिर अपना कटवावे मेरा.....
धर्म की खातिर बन्दा बेरागी
अंग अंग कटवावे मेरा....
धर्म की खातिर स्वामी श्रद्धानन्द
गोली सिने बिच खावे मेरा .....
धर्म की खातिर लेखराम जी.
छुरा पेट बिच खावे मेरा.....
धर्म की खातिर ऋषि दयानन्द
जहर दुध विच पावे मेरा.....

www.thearyasamaj.org

वीर दल है वीर दल आर्यों का वीर दल ।।
राम का संदेश है कृष्ण का उपदेश है ।
महर्षि का तेल बल आर्यो का वीर दल ।।

शेरों का यह शेर है बहादुर और दिले है ।
मानवता का दिव्य बल आर्यो का वीर दल ।।
टक्कर में जो आवेगा रावेगा पछतावेगा ।
शत्रु का दे सर कुचल आर्यो का वीर दल ।।

ओ म् ध्वज आकाश में दुनियां के इतिहास में।
देश में विदेश में आर्यो का वीर दल ।।
देश को जगायेगा क्रान्ति नव लायेगा ।
दे मचा उथल पुथल आर्यो का वीर दल ।।

आर्यो की शासन है चन्द्रमा समान है ।
कार्यो में है सफल आर्यो का वीर दल ।।
ओ म् जिसका देव है वेद जिसका धर्म है ।
सत्य जिसका कर्म है आर्यो का वीर दल ।।

गीत क्र0-81

जिन्दगी है शान की, शान से बिताये जा ।
आन बान भान पर तू, अपना सर कटाये जा ।।

जिन्दगी है एक दीप, और शान उसमें तेल ।
तेरा दीप जितनी देर, जल सके जलाये जा ।।

जिन्दगी है एक कटार, और शान उस पे धार ।
अपनी इस कटार को सदैव चमचमाये जा ।।

है आर्य जौनवान, ज्ञान आर्य का निशान ।
ऊंचा उठाये तू निशान, ये ही गीत गाये जा ।।

चाहे चली जाये जान, पर न जाये अपनी शान ।
जान भी गंवाकर अपने देश को बचाये जा ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 82

कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा ।
ये जिन्दगी है कौम की तू कौम पे लुटाये जा ।।
तू शेरे हिन्द आगे बढ़ मौत से कभी न डर ।
फलक तलक उठाके सर जोशे वतन बढ़ाये जा ।।

ईश्वर तेरी सुनता रहे हिम्मत तेरी बढ़ती रहे ।
जो सामने तेरे पड़े तू खाक में मिलाये जा ।।

गीत क्र0- 83

कदम से कदम को बढ़ाता चला चल ।

तेरी जिन्दगी का सवेरा हुआ है ।
अभी सारा अंधेरा हुआ है ।
तू मंझिल पे मंझिल बनाता चलाचल ।।1।।

तेरे पांव मंझिल से ना डगमगाएं ।
तुझे रोक सके ना ये काली घटाएं ।
तू तूफान को भी हटाता चला चल ।।2।।

अगर प्राण देने पड़े आन पर तो
तुझे देश की शोभा और शान पर तो
खुशी से तू सर को कटाता चला चल । ।।3।।

सब मनुष्यों का विद्वान् होना तो सम्भव नहीं , परन्तु धार्मिक होने का सम्भव सबके लिए है । ।। **व्यवहारभानु** ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 84

है पुकारता स्वदेश जाग जाग नौजवान
हो गया प्रभातकाल नीद त्याग नौजवान

बन शिवा प्रताप राम भीम कृष्ण के समान
याद करके पूर्वजों की वीरता व स्वाभिमान
शुत्रुओं के रक्त सेतू खेल फाग नौ जवान.....(1)

धाय धांय कर समाज और देश जल रहा
देख पीड़ितों की आहों का धुआं निकल रहा ।
लग रहा है देश भर में एक आग नौजवान .....(2)

हैं हमारे पूर्वजों की जो पूनीत यादगार
जिसपे प्राण दे गये हैं देश भक्त बेसुमार ।
हो न जाये नष्ट देश का वो बाग नौजवान .....(3)

गीत क्र0- 85

हम रूकना झुकना क्या जाने
हम बढ़ते हैं सीना ताने

हम सैनिक वीर शहीदों के
पर हित में जिनके शीश कट
हम दयानंद के दीवाने हम.....(1)

जो गया राज में अंग्रेजों के
हमें ज्ञान हैं सभी सुभेदों के
हिन्दी भाषा के परवाने हम रूकना....(2)

हम हंस हंसकर दुःख झेलेंगे ।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे
हम लेखराम से मस्ताने हम.....(3)

www.thearyasamaj.org

हम कर्म वचन के सच्च हैं
हम धुन अपनी के पक्के हैं
हम वेद ज्योति के दीवाने हम रूकना.....॥4॥

दुःख आता है तो आने दो
सुख जाता है तो जाने दो
हम वीर हैं डरना क्या जाने हम...॥5॥

हम वैदिक नाद बजायेंगे ।
सुख शान्ति में जगत में लायेंगे ।
सारी दुनियां हमको माने हम रूकना.....॥6॥

गीत क्र0-86

करना है निर्माण हमें तो करना है ।
आर्य राष्ट्र र्मिाण हमें तो करना है ।
देश में जन्म लिया है तूने
मांका दूध पिया है तूने
जीवन अपना दान हमें तो करना है ॥1॥

कहां गईवो तेरी जवानी
खून तेरा क्या बन गया पानी
कष्ट महान आसान हमें तो करना है .....॥2॥

आर्यावर्त के टुकड़े हो रहे
आर्य वीरों तुम क्यों सो रहे
भारत का उत्थान हमें तो करना है ।.....॥3॥

ऋषिवर ने जो मार्ग दिखाया ।
श्रद्धानन्द ने हैं अपनाया
लेखराम बलिदान हमें तो करना है ।.....॥4॥

आर्यवीरों अब घर घर जाकर
सोयाआर्य फिर से जगाकर
वेद पढ़ो अभियान हमें तो करना है । .....॥5॥

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 87

ये ओ३म का झंडा आता है ।
ऐ सोने वालो जाग चलो ।

लेकर उगते रवि की लाली ।
ले नित्य वंसति हरियाली ।
ये ले ले आता है धरती के जागे भाग चलो ।।1।।

पर्वत से कह दो नम जाये सागर से कह दो थम जाये ।
यह एक बनाने जगति कोउमड़ा है रे अनुराग चलो ।।2।।

जब गोली गोले बरसेंगे ये सिर कट कटकर सरकेंगे ।
हम मौत के भीषण आंगन में हंस हंस खेलेंगे फाग चलो ।।3।।

अब प्रेम सच्चाई विद्या का
ये झंडा लहराया बाका
पाखण्ड असत्य अविद्या से
कह दो रे अब तुम भाग चलो ।।4।।

गीत क्र0- 88

ये ओ३म् का झंडाहमारी कौम का झंडा
सारे जगत पर लहरा देंगे ओइम का झंडा
हमारी कौम का झंडा ।।

हरिश्चन्द्र ने इसे लगाया काशी के बाजार में
मुर्दाघाट पर खड़ा किया था गंगाजी के घाट में ।।

एक दिन रावण ने लंका में नीचे इसे दिखाया था ।
श्री कृष्ण ने अर्जुन के संग फिर इसको लहराया था ।।

सबसे पहला दर्जा इसका हिटलर ने बतलाया था ।
अमरीका इटली वालों ने इसको शीश झुकाया था ।।

भारत में मतमतान्तरां ने नीचे इसे दिखाया था ।
विरजानन्द ने दयानन्द से फिर इसको लहराया था ।।

www.thearyasamaj.org

जग में वेद प्रचार हमें तो करना है ।

घर घर में हम हवन करेंगे ।
जपकर निश दिन ओइम भजेंगे ।
शुद्ध वायु विस्तार हमें तो .....।1।

वेद पढ़े हम वेद पढ़ावें ।
संध्या गायत्री सिखलावें ।
जीवन लोक सुधार हमें तो.....।2।

गिरे हुवे जो भाई हमारे ।
सचमुच हैं आंखों के तारे ।
इनका अब उद्धार हमें तो.....।3।

पतित अछूत कहें जो जावे ।
भाई हमारे कह अपनावें ।
सब में प्रेम प्रसार हमें तो.....।4।

बन्धु विधर्मी जो बन जावे ।
धर्मदान दे उसे मिलावें ।
शुद्धि की भरमार हमें तो.....।5।

कभी किसी से नहीं डरेंगे ।
धर्म पन्थ पर सभी मरेंगे ।
निर्भय यह उच्चार हमें तो.....।6।

मरने सेभई यों क्या डरना ।
जन्म लोक में फिर-फिर धरना ।
काम यही हर बार हमें तो.....।7।

नहीं कभी अन्याय सहें हम ।
जमें सत्य पे शान्त रहे हम ।
प्रभू से यही पुकार हमें तो .....।8।

www.thearyasamaj.org

गीत क्र0- 90

वैदिक रीति सिखलाई-सिखलाई आर्य समाज ने ।

ऋषि मुनियों के पथ पर चलना ।
एक प्रभू की पूजा करना ।
संध्या विधि सिखलाई सिखलाई .....।1।

ब्रह्मचर्य और गृहस्थ बनाया ।
वानप्रस्थ संन्यास सिखाया ।
आश्रम विधि जतलाई-जतलाई.....।2।

बाल विवाह को बन्द कराया ।
वृद्ध विवाह का नाम मिटाया ।
स्वयंवर प्रथा चलायी चलायी .....।3।

पाप भयंकर मांस का खाना ।
शराब से घी को बिसराना ।
मिथ्या लत छुड़वायी-छुड़वायी.....।4।

स्वदेश की वस्तु अपनावे ।
स्वधर्म पे निज शिश कटावे ।
धर्म की की दुढताई दुढताई .....।5।

जिसने ऋषि को जहर पिलाया ।
थैली दे उसको भिजवाया ।
कातिल की करी भलाई भलाई .....।6।

जो मनुष्य धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्त्तता है उसको सर्वत्र सुख लाभ और जो विपरीत वर्त्तता है वह सदा दुखी होकर अपनी हानि कर लेता है । ।। व्यवहारभानु भूमिका ।।

www.thearyasamaj.org

गीत क्रमांक-91

जगको जगाने वाला (आर्य समाज है)
जग की पुकार है ये युग की आवाज है ।
आर्य समाज है ये आर्य समाज है ।

(1) ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया
जड़की आराधना के पाप से बचा दिया
पाखण्ड ढोंग जिसके बल पे कॉप रहा आज है

(2) विदेशियों के ठोकरों ने कर दिया बेहाल था ।
दम्भियों का और छोर फैला हुवा जाल था
जिसने दीन देश जाति की बचाई लाज है

(3) नारियां भी वेद का पुनित गानकर रहीं
रूढ़ियां कुरीतियां है अपने आप मर रहीं
वेद के प्रकाश काजो कर रहा सुकाज है

(4) कौन है जो आर्या की भावना जमा गया
कौन मौत से हमें झूंझना सिखा गया
श्रद्धानन्द लेखराम व्यारा हंसराज है ।

(5) देश हित में वाद दी अनेक ही जवानियां
जिसने रक्त से लिखी है देश की कहानियां
लाजपत लुटाके आज पा लिया स्वराज है ।

गीत क्रमांक- 92

संगठन हम करें आपदों से लड़े हमने ठाना ।
हम बदल देंगे सारा जमाना ।।।

वीर प्रताप के शेर जागों वीर बन्दा की शमशेर जागो ।
बज रहा है बिगुल नोजवां तू निकल रण में जाना ।।

शेर शिवराज की तेग खड़के ध्वनी हर हर महादेव भड़के ।
शक्ति हो साथ में ओइम ध्वज हाथ में बढ़ते जाना ।।

www.thearyasamaj.org

चाहे आंधी या तूफान आये वर्षा ओले या बादल हों छाये ।
हम रूकेंगे नहीं और झुकेगे नहीं बढ़ते जाना ।।
आर्य वीरों ने यह राग गाया बैदिक राज्य का डंका बजाया ।
हम जीयें या मरे छल बलों से लड़े हमने ठाना ।।

गीत क्र0- 93

काम ज्यादा बातें कम (2)
मेहनत से हैं शाने वतन मेहनत है (ईमाने वतन)-2
महक रेगिस्तान वतन ताज है फूलों पर शबनम ।।

हिन्द वतन हम सबका है हिन्द चमन हम सबका है ।
हिन्द का धन हम सबका है हिन्द के रखवाले हैं हम ।।

अन्धी रस्में जाय बदल रूप निहारे आज सकल ।
झूमें मौजे इल्मो अमल गंगा यमुना का संगम ।।

सबकी हंसी हम सबकी हंसी सबकी खुशी हम सबकी खुशी ।
गुरबत होगी दूर तभी सबका गम हो अपना गम ।।

कोई गाफील रहने न पाये कोई काहिल रहने न पाये ।
कोई जाहिल रहने न पाये हम सब रखते हैं दम खश ।।

गीत क्रमांक- 94

बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल ।
सत्यमार्ग पर चला रूके ना एक पल ।।
प्रेम का संचार परस्पर सदा रहे ।
द्वेषभाव लेश मात्र भी जुदा रहे ।
मन रहे पवित्र की जैसे हो गंगा जल (1)

सेवा भाव मन में सर्वदा निष्काम हो ।
कर्तव्य कर्म में ना कभी भी विराम हो ।
हो पहाड़ की तरह निश्चय सदा अचल (2)

www.thearyasamaj.org

राह में तुम्हारी मुश्किलें भी आएंगी ।
भीम रूप धारकर तुम्हें डराएगी ।
चीर कर मुसीबतों को जाओ तुम निकल ﴾3﴿

पीठ पर तुम्हारी महर्षि का हाथ है ।
ईश की दया सदा तुम्हारें साथ है ।
भक्ति भाव से पथिक जनम करो सफल ﴾4﴿

गीत क्रमांक - 95

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।।टेक।।

﴾1﴿ जल में थल में औहर गगन में
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में
ओषधिवनस्पति वन उपवन में
सफल विश्व में जड़ चतन में ।।शक्ति।।

﴾2﴿ ब्राहम्ण के उपदेश वचन में
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में
वैश्यजनों के होवे धन में
और शद्रों हो चरणन में ।शान्ति।।

﴾3﴿ शक्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में
नगर ग्राम में और भवन में
जीव मात्र के तन में मन में
और जगत के हो कण कण में ।।शक्ति।।

शिक्षा:- जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको **शिक्षा'** कहते हैं ।

मनुर्भव- मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुः और हानि लाभ का समझे । ﴾ स्वमन्तव्यामन्तव्य ﴿

www.thearyasamaj.org

शोभायात्रा में बोले जाने वाले जयघोष

जो बोले सो अभय/वैदिक धर्म की जय
जगद्गुरू ऋषि वर दयानंद सरस्वती की/जय
गुरूवर विरजानन्द सरस्वती की/ जय
मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र की/जय
योगेश्वर श्री कृष्ण चन्द्र की/जय
भारत माता की/जय
देश पर शहीद होने वाले वीरों की/जय
गो माता का/पालन करें
राष्ट्रभाषा हिन्दी की/जय
आर्य समाज/अमर रहे
गुरूकुल शिक्षा/अमर रहे
वेद की ज्योति/जलती रहे
ओम् का झंडा/ऊंचा रहे
हम बदलेंगे/जग बदलेगा
हम सुधरेगें/जग सुधरेगा
आर्य वीरों/जागो
संसार के श्रेष्ठ पुरूषों/एक हो
वेद प्रचारक/आर्य समाज
पतित पावन/ आर्य समाज
दलितोद्धारक/ आर्य समाज
शुद्धि प्रचारक/ आर्य समाज
पाखण्ड विनाशक/आर्य समाज
सत्य प्रसारक/आर्य समाज
अनाथ रक्षक/आर्य समाज
विधवा रक्षक/ आर्य समाज
देश की रक्षा कौनन करेगा/हम करेंगे हम करेंगे
धर्म की रक्षा कौन करेगा/हम करेंगे हम करेंगे

www.thearyasamaj.org

वेद की रक्षा कौन करेगा/हम करेंगेहम करेंगे
गऊ की रक्षा कौन करेगा/ हम करेंगे हम करेंगे
वैदिक नाद बजो को/ऋषि दयानन्द आये थे
सोया देश जगाने को/ऋषि दयानंद आये थे
ईश्वर भक्ति सिखाने को/ ऋषि दयानंद ।आये थे
पाखंण्ड का गढ ढाने को/ऋषि दयानंद आये थे
सच्ची राह दिखाने को/ऋषि दयानंद आये थे
गुरूडम को मिटाने को/ऋषि दयानंद आये थे
शुद्धिचक्र चलाने को/ऋषि दयानंद आये थे
समता मंत्र सिखाने को/ऋषि दयानंद आये थे
नारी सम्मान कराने को/ऋषि दयानंद आये थे
छआछूत मिटाने को/ऋषि दयानंद आये थे
गुलामी की जड़ हिलोन को/ऋषि दयानंद आये थे
वैदिक ज्योति जगाने को/ऋषि दयानंद आये थे
जोर से बालो/जय ऋषि की
सब मिल बोलो/जय ऋषि की
आगे बोलो/जय ऋषि की
पीछे बोलो/ जय ऋषि की
हम भी बाले/जय ऋषि की
तुम भी बोले/जय ऋषि की
ऊपर बोलो/जय ऋषि की
नीचे बालो/ जय ऋषि की
प्रेम से बोला/जय ऋषि की
जय ऋषि की/ जय ऋषि की
ये ऋषियो का दश /आर्यावर्त
ये राम का देश /आर्यावर्त
ये कृष्ण का देश/आर्यावर्त
ये हगारा देश /आर्यावर्त
हम सबका देश /आर्यावर्त

आर्थिक सहयोग

सतीश खंडेलवाल
ब्र. अरुणकुमार आर्य

<u>हमारी सेवायें</u>

१) फोटो काँपी
२) लेमिनेशन
३) स्टेशनरी
४) बाईडिंग
५) डूप्लीकेटिंग
६) स्क्रीन प्रिंटिंग
७) अमोनिया प्रिंट
८) ग्लो साइन बोर्ड
९) रिफलेक्टिव साइन बोर्ड
नम्बर एवं नेम प्लेट

स्पेयर पार्ट एवं – मशीन रिप्येरिंग के लिए सम्पर्क करें।

खंडेलवाल फोटो स्टेट- १५ थाना रोड, न्यू मार्केट, भोपाल-४६२००३ (म.प्र.)
फोन नं. ५५१२५४

www.thearyasamaj.org